रुपये 10

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-06, कुल पृष्ठ-36, फाल्गुन-चैत्र, विक्रम सम्वत् 2079-80, मार्च, 2023

भजन, भोजन, भाषा, भूषा, भवन एवं भ्रमण में दिखे भारतीयता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की परिवार-प्रबोधन गतिविधि के अखिल भारतीय संयोजक डॉ. रविन्द्र जोशी जी ने अपने दिल्ली प्रांत प्रवास के अंतर्गत झण्डेवाला विभाग में नव विवाहित दम्पतियों के सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त किए। 26 जनवरी को सेवा भारती दिल्ली के झण्डेवाला विभाग द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह के बाद 'पगफेरा कार्यक्रम' में आए 30 नव-दंपतियों एवं उनके परिवारों से संवाद करते हुए डॉ. रविन्द्र जोशी जी ने सुखी पारिवारिक जीवन के सूत्र बताए। उन्होंने कई प्रेरणादायी कथाओं एवं खेलों के माध्यम से पत्नी एवं पति के आपसी सहयोग द्वारा सभी समस्याओं से निकलने के समाधान भी दिए। उन्होंने कहा कि परिवार में प्रतिदिन सामूहिक बैठ कर अपने मन की बात को साझा कर हृदय के संताप को दूरकर कैसे सभी स्वस्थ रह सकते हैं एवं इसी प्रकार परिवार भाव द्वारा सभी परिवारजनों को प्रसन्न एवं निरोग रखा जा सकता है। डॉ. जोशी जी ने छह 'भ' का सूत्र भी कार्यक्रम में उपस्थित बंधु एवं भगिनियों के समक्ष रखा- भजन, भोजन, भाषा, भूषा, भवन एवं भ्रमण में भारतीय परंपराओं, जीवन मूल्यों एवं अपनी सनातन पद्धति को प्राथमिकता देने का आग्रह रखा।

रांची (झारखंड) से पधारीं बहिन पूनम जी ने अपने व्यक्तव्य में आने वाली भावी संततियों को संस्कार एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से सुदृढ़ बनाने हेतु माता-पिता को अच्छी सामाजिक, धार्मिक, वैचारिक एवं संस्कारित जीवन शैली अपनाने की सलाह दी। कार्यक्रम में नव-दंपतियों, उनके परिवारजनों एवं जिला, विभाग एवं प्रांतीय कार्यकर्ताओं की कुल संख्या लगभग 200 रही। इसमें दिल्ली प्रांत से परिवार प्रबोधन के संयोजक श्री भगवान दास जी, सह-संयोजक श्री सुनील बजाज जी, सेवा भारती दिल्ली के महामंत्री श्री सुशील जी, सह-संगठन मंत्री श्री सुनील जी, प्रांत मंत्री श्री निर्भय जी, करोल बाग जिला संघचालक मा. अशोक सचदेवा जी, परिवार प्रबोधन की प्रांत टोली के सदस्य श्री हरीश मिश्रा, परिवार प्रबोधन के विभाग प्रमुख श्री मनोज जी, सेवा भारती विभाग अध्यक्ष श्री संजीव नारंग जी, विभाग मंत्री श्रीमती मधु जी, करोलबाग जिला कार्यवाह श्री अनिल जी, जिला संयोजक श्री राजेश जी सहित अनेक प्रमुख व्यक्ति उपस्थित रहे।

अपने पालक के पास गया बालक

गत 19 फरवरी को मातृछाया, मियांवाली नगर में हिमाचल प्रदेश के एक दंपति ने छह महीने के एक बच्चे को गोद लिया। दत्तक ग्रहण समारोह में मियांवाली नगर थाने के एसएचओ डीके शुक्ला, व्यवसायी कुलदीप कोहली और उपाध्यक्ष सेवा भारती दिल्ली प्रांत संजय जिंदल, योगेश गर्ग, प्रेम सागर भाटिया, राकेश कथूरिया, डॉ ज्योति कौर, सुश्री नीरू महाजन और कई अन्य प्रमु नागरिक शामिल हुए। बता दें कि मातृछाया, परित्यक्त और निराश्रित बच्चों की देभाल के उद्देश्य से की गई एक पहल है, जिसने कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से एक नि:संतान दंपति को एक परित्यक्त बच्चे को गोद लेने का सफलतापूर्वक मार्ग प्रशस्त किया। परित्यक्त शिशुओं के लिए घर उपलब्ध कराना पहल के पीछे सेवा भारती का मुख्य उद्देश्य है। 2002 में इसकी स्थापना के बाद से अब तक 353 परित्यक्त शिशुओं को परिवारों द्वारा गोद लिया गया है।

सेतु योजना का शिविर

मानव सेवा समिति कुष्ठ आश्रम, साई बाबा मन्दिर में जाति प्रमाणपत्र बनवाने का सेवा भारती (सेतु योजना) के कार्यकर्ताओं द्वारा शिविर लगाया गया। इसमें बस्ती के लोगों ने भी सहयोग किया। बस्ती के प्रधान की बिटिया पार्वती ने अपनी टोली के साथ जाति प्रमाण पत्र के फॉर्म भरने में सेतु के कार्यकर्ताओं का सहयोग किया। 130 लोगों को जानकारी दी गई और 70 लोगों का फार्म भरा गया।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
आचार्य मायाराम पतंग
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर

एक प्रति : 10/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 100/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-40, अंक-06, कुल पृष्ठ-36, मार्च, 2023

विषय - सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
सम्पादकीय		04
आइए, मनाते हैं अपना नववर्ष	ठाकुर राम सिंह	06
नव सम्वत्सर सम्बन्धित मुख्य घटनाएं	गंगा प्रसाद 'सुमन'	08
प्रतिपदा से बदलने लगती है प्रकृति	पं. बाबूलाल जोशी	09
भगवती ही संपूर्ण प्रकृति	इंदिरा मोहन	10
श्रीराम जन्म के अनेक कारण	रमेश चंद्र अवस्थी	12
होली	आचार्य मायाराम पतंग	14
मान और मर्यादा की रक्षा का उत्सव रामनवमी	नीतू कुमारी	15
अनूठी सेवा	आशीष शुक्ल	16
राम सगुन भए भगत प्रेम बस	सुभाष चन्द्र बग्गा	17
महापुरुषों के महापुरुष	आचार्य मायाराम पतंग	19
खोलें मन की गांठें	इंदिरा मोहन	20
राष्ट्रऋषि श्रीगुरुजी	प्रतिनिधि	21
माता-पिता अवश्य पढ़ें		22
बेटी की विदाई	सतीश नापित	22
सामाजिक समरसता .... संत तुकाराम	स्वाति पाठक 'स्वाति'	23
रंगों का त्योहार : होली	पंडित रामप्रसाद	25
औरों के हित जो जीता है	प्रतिनिधि	
कानून में महिला अधिकार	वीना शर्मा	27
जोग और भोग	हेमन्त शर्मा	31
धर्म और सम्प्रदाय में अंतर	आचार्य कृष्ण देव	32
बुजर्गों का अनुभव	आचार्य राजन दीक्षित	33

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

करें स्वागत संवत्सर का

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ब्रह्मा जी द्वारा जगत्-सृष्टि का निर्माण किया गया था। अत: ब्रह्मपुराण के इस यथार्थ को मानने वाले इसी दिन को प्रथम दिन - नव दिन मानते हैं और उसी दिन हर्ष और उल्लासपूर्वक नये वर्ष का प्रारम्भ मानते हैं। यह एक वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक सत्य है। सम्राट विक्रमादित्य ने भी इसी दिन अपने विक्रम नवसंवत्सर को प्रारम्भ किया था, जो आज भी उसी सम्मान के साथ भारतीय संस्कृति में स्वीकृत है और वर्ष भर के समस्त कार्य इसी परम्परा पर इस संवत् से सम्बंधित तिथियों पर ही मनाये जाते हैं। हमारे अवतारी पुरुषों की जयन्तियाँ और विशिष्ट महापुरुषों के जन्मदिन उसी आधार पर माने जाते हैं। एक प्रकार से कालगणना का समस्त उपक्रम तथा उसका केन्द्रबिन्दु इन भारतीय तिथियों पर ही आधारित है। चन्द्रमा की पूर्णता पूर्णिमा को और उसी की लुप्तता अमावस्या तिथि को सुनिश्चित है और वर्ष भर यही क्रम चलता रहता है। श्रीराम का अवतरण नवमी के दिन निश्चित है और श्रीकृष्ण का पदार्पण अष्टमी तिथि की मध्यरात्रि में होता है। इसी प्रकार अन्य पर्व भी हैं और उन्हीं तिथियों में प्रतिवर्ष मनाये जाते हैं। हरिद्वार का कुम्भ महापर्व समुद्र मंथन काल से ही मेष संक्रांति प्रवेश पर आयोजित किया जाता है तथा प्रयागराज का महाकुम्भ पर्व मौनी अमावस्या पर सर्वमान्य है। विश्व के असंख्य नर-नारी पता नहीं किस स्वयंप्रेरित आस्था की डोर में बँधे हुए चले आते हैं। यह सब हमारी पंचांग परम्परा पर ही आधारित है जिसका शुभारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही होता है।

मंगल दीप जलाकर, पंचदेवों की पूजा कर, पूरे वर्ष की गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले तिथि, वार, नक्षत्र, ग्रह, राशि आदि के नाम को भी भूलकर केवल विदेशी नामों, तिथियों आदि को जीवन का संबल बनाकर और उन्हीं की परम्पराओं का पालन कर एक जनवरी को नववर्ष मनाते हैं और अश्लील गानों और चेष्टाओं द्वारा नये वर्ष के भौतिक जगत् में प्रवेश कराने के प्रयास को सर्वोत्तम मानते हैं, जबकि उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है।

जब यह सुनिश्चित है कि हमारा एक अपना इतिहास है, अपनी एक परम्परा है, अपनी मान्यताएँ हैं और उसका एक अस्तित्व है और परम सात्विक अस्तित्व, जिसके वशीभूत होकर हम 'विश्वं भवति एक नीडम्' की परम उदात्त मनोवृत्ति का आश्रय लेकर सद्वृत्तियों की सर्जनात्मकता में चिरस्थित रहते हुए अनेकत्व में एकत्व का दर्शन करते हैं और सृष्टि रचना के प्रथम दिन अर्थात् नववर्ष में उस दिव्यता के आश्रित होकर 'संगच्छध्वम् संवदध्वम् संवो मनांसिजानताम्' के यथार्थ उद्घोष को करते हुए संवत्सर की उपासना करते हैं।

यही नववर्ष का दिव्य उल्लास बंधन में जकड़े अंग प्रत्यंग को सक्रिय बना देता है और रहस्य पर से परदा उघाड़ देता है और हम मंगल कामना से अभिभूत हो जाते हैं। विडम्बना यह है कि आज भारतीयता के नाम पर जो कुछ भी है वह उपेक्षित हो रहा है और इस उपेक्षा का शिकार बन रही हैं भारतीय परम्परायें, भारतीय मान्यताएँ, भारतीय विचारधाराएँ और भारतीय परिवेश, आज हमें उसमें पता नहीं एक अनजानी केवल मानी हुई वितृष्णा केवल एक दम्भ के आधार पर पनप रही है। हम सब कुछ भूलते चले जा रहे हैं। आज हमें भारतीय तिथियाँ विस्मृत हो गई हैं। धीरे-धीरे एक एक दिन कम ही होती जा रही है।

मंगल दीप जलाकर, पंचदेवों की पूजा कर, पूरे वर्ष की गतिविधियों को नियंत्रित करने वाले तिथि, वार, नक्षत्र, ग्रह, राशि आदि के नाम को भी भूलकर केवल विदेशी नामों तिथियों आदि को जीवन का संबल बनाकर और उन्हीं की परम्पराओं का पालन कर एक जनवरी को नववर्ष मनाते हैं और उसकी पूर्व रात्रि में तथा अर्धरात्रि में भोंडे प्रकार के अश्लील गानों और चेष्टाओं द्वारा नये वर्ष के भौतिक जगत् में प्रवेश कराने के प्रयास को सर्वोत्तम मानते हैं, जबकि उससे हमारा कोई लेना-देना नहीं है। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की महिमामयी स्वीकृति हमारे चरित्र को पुन: समुज्ज्वल बना सकेगी और भारत पुन: जगद्गुरु की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेगा। ❐

पाथेय

युक्त कर्मफल त्यक्त्वा, शान्तिमाप्रोति नैष्ठकीम्।
अयुक्त कामकारेण, फलेसक्तो निबध्यते॥

सरलार्थ : निष्ठावानभक्त ही शान्ति को प्राप्त करता है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि वह भक्त अपने सभी कर्मफल मुझे समर्पित कर देता है, जो फल की कामना से ही कर्म करता है, वही बंध जाता है। स्पष्ट संकेत है कि कर्म करते रहो और फल की इच्छा मत करो।

शाश्वत धर्म

प्रदूषण नियंत्रण आवश्यक है परन्तु प्रदूषण एक अभिशाप है जो विज्ञान की कोख से ही जन्मा है। इसे सहने के लिए जनता विवश है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार गत दस वर्षों में लगभग चालीस हजार लोगों की जान प्रदूषण से जा चुकी है। स्पष्ट है कि पर्यावरण शुद्ध किए बिना विकास यात्रा अधूरी है। इसलिए हर क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया जाना अनिवार्य है। इस अभियान में सभी का सहयोग अपेक्षित है। जब तक सभी नहीं जुड़ जाते, इसकी सफलता में भरोसा नहीं होता।

– कल्याण मासिक पत्रिका से साभार

मार्च 2023 माह के स्मरणीय दिवस

दिनांक	वार	महत्व
1.3.2023	बुधवार	नन्दगांव बरसाने की लट्ठमार होली
2.3.2023	गुरुवार	मेला खाटू श्यामजी
7.3.2023	मंगलवार	होली दहन, चैतन्य प्रभु जयन्ती
8.3.2023	बुधवार	धुलैंडी रंग, महिला दिवस, शब्बेरात
9.3.2023	गुरुवार	संत तुकाराम जयन्ती
15.3.2023	मंगलवार	शीतलाष्टमी, बासौड़ा
19.3.2023	रविवार	गुरु हरगोविन्द सिंह निधन
22.3.2023	बुधवार	नवरात्रि, प्रतिपदा, डॉ. हेडगेवार जयंती
23.3.2023	गुरुवार	रोजे शुरू
24.3.2023	शुक्रवार	गणगौर
26.3.2023	रविवार	रामराज्या
29.3.2023	बुधवार	दुर्गाष्टमी
30.3.2023	गुरुवार	श्रीरामनवमी

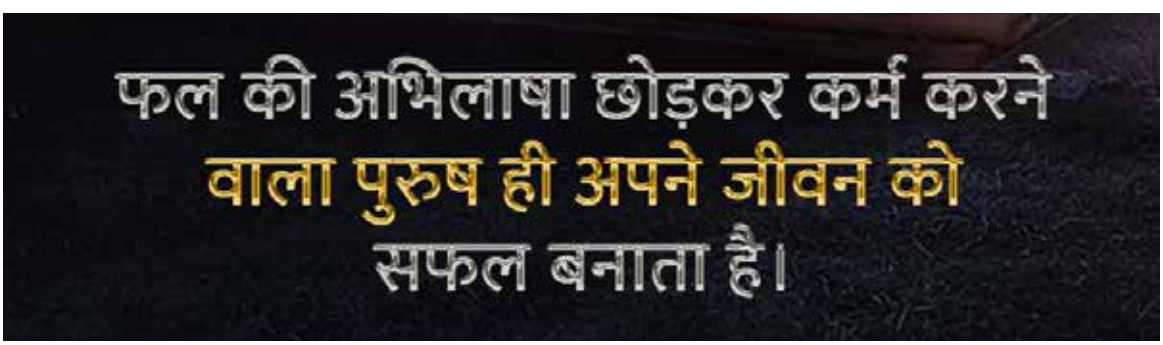

आइए, मनाते हैं अपना नववर्ष

■ ठाकुर राम सिंह

इस समय विश्व में 70 से अधिक कालगणनाएं प्रचलित हैं। उनसे संबंधित देशों में उनके नववर्ष अपने-अपने हिसाब-किताब के अनुसार आते हैं और अपने-अपने देश की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार मनाये जाते हैं। परन्तु इन सभी कालगणनाओं के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इनका आधार सारे ब्रह्माण्ड को व्याप्त करने वाला कालतत्व न होकर व्यक्ति विशेष, घटना विशेष, वर्ग विशेष, सम्प्रदाय विशेष अथवा देश विशेष है। इसी कारण इन कालगणनाओं से संबंधित देशों की संस्कृतियां भी आदि हैं।

भारतीय संस्कृति

विश्व में केवल भारतीय संस्कृति ही एक ऐसी संस्कृति है जो अनादि है क्योंकि उसका मूल वेद है। वेदों में दिये सिद्धांत शाश्वत सत्य और नित्य हैं। प्राचीनतम होने पर भी वे सदैव नवीन हैं। उनमें आज तक कोई भूल निकाली नहीं जा सकी है। यदि कभी विज्ञान से मतभेद हो गया तो भी वैज्ञानिकों को घूम फिर कर पुनः वेदों की ही शरण में आना पड़ा है। वेदों के सिद्धांत अपरिवर्तनीय हैं और इसी कारण ये परिस्थिति निरपेक्ष हैं।

वर्ष प्रतिपदा का इतिहास

वर्तमान मानव सृष्टि के बारे में विद्वानों में बहुत मतभेद हैं। पश्चिम के खगोलशास्त्री, दार्शनिक, विचारक और उनके धर्मग्रंथ इसे छह-सात हजार वर्ष पुरानी मानते हैं। परंतु भूगर्भीय क्षेत्र में निरंतर हो रहे अनुसंधानों के कारण यह बात अब वैज्ञानिक भी स्वीकार करने लगे हैं कि मानवीय सृष्टि की प्राचीनता मानव की कल्पनाशक्ति से परे है। भारतीय कालतत्व विशेषज्ञ मनीषियों या वेदों में दिये विवरणानुसार यह मानवीय सृष्टि लगभग दो अरब वर्ष पुरानी है। भूगर्भीय क्षेत्र में निरन्तर पाश्चात्य वैज्ञानिकों के जो अनुसंधान हो रहे हैं उनमें प्राप्त तथ्यों के अनुसार मानवीय सृष्टि की प्राचीनता छह-सात हजार वर्ष के बजाए 20 हजार वर्ष के निकट जा पहुंची है। इससे पाश्चात्य विद्वानों की पूर्व अवधारणा कि यह विश्व छह-सात हजार वर्ष पूर्व बना था, धराशायी हो जाती है। अब उसमें परिवर्तन अनिवार्य हो गया है। अब हमें जिस पृथ्वी ग्रह पर हम रहते हैं इसके बारे में भी विचार करना विषय के प्रतिपादन के लिए लाभदायक होगा।

विश्व के प्रायः सभी भूगर्भशास्त्री यह मानते हैं कि इस पृथ्वी का पहले अपना कोई अस्तित्व नहीं था। यह सूर्य का हिस्सा, उसका अभिन्न अंग थी। प्राकृतिक और दैवी कारणों से यह हिस्सा सूर्य से पृथक हो गया आज से 4,13,29,49,123 वर्ष पूर्व। यही इस पृथ्वी की जन्मतिथि है। उस समय यह पृथ्वी पूर्णतः जलमग्न थी और इसका तापमान 2000 डिग्री था। इसको ठंडा होने में लाखों वर्ष लगे और जब इसका तापमान 200 डिग्री तक पहुंच गया तब इसमें प्राकृतिक-दैवी कारणों से भूनिर्माण शुरू हुआ। कालक्रम में जो इसमें से प्रथम हिस्सा बाहर आया उसका नाम सुमेरू पर्वत है। इसी सुमेरू पर्वत के एक पवित्र भूखंड पर आज से 1,97,29,49,123 वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रविवार के दिन प्रातः 9 बजे प्रथम मानव का प्रादुर्भाव इस अद्‌भुत विश्व के महाविकल्पक, सृष्टि निर्माता ब्रह्मा के रूप में हुआ। तद्नुसार आगामी 22 मार्च, 2023 को उसका 1,97,29,49,123वां वर्ष पूरा होकर 1,97,29,49,124वां वां वर्ष प्रारम्भ होने जा रहा है। इसी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नववर्ष, नवमास और नवदिन एक साथ शुरू हुए।

वर्ष प्रतिपदा का महत्व

भारतीय संस्कृति में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का बहुत बड़ा महत्व है, क्योंकि इस पृथ्वी पर पहले मानव की उत्पत्ति इसी दिन हुई। इस कारण यह दिन हम भारतवासियों के ही लिए नहीं, सारी मानव सृष्टि के लिए भी अत्यंत पूजनीय है। इस शुभ दिन देश भर में अनेक सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन होता है। शुभ कामनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए अभिनंदन पत्र अपने संबंधियों और इष्ट मित्रों को भेजे जाते हैं। नये वर्ष की नई दैनंदिनी खरीदी जाती है।

देश के हर नगर और हर गांव, परिवार में नये वर्ष का फल सुनने के लिए पारिवारिक कार्यक्रमों में कुल

के पुरोहित आते हैं। परिवार के सारे सदस्य एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं और पुरोहित नये पंचांग से नये वर्ष के फल के बारे में बताता है। बाद में प्रसाद और मिठाइयां बांटी जाती हैं। इस शुभ दिन के उपलक्ष्य में नयी वस्तुएं खरीदने का भी चलन है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ कुछ ऐसी विशेष घटनाएं संबंधित हैं जिनके कारण इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। यथा प्रभु रामचन्द्र का राज्याभिषेक, धर्मराज युधिष्ठिर का राजतिलक, विक्रमादित्य के विक्रम संवत् का शुभारंभ, सम्राट शालिवाहन का शक संवत्, स्वामी दयानंद द्वारा आर्य समाज की स्थापना, प्रखर देशभक्त संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के निर्माता डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्मदिन।

ईसाई संवत् का इतिहास

ईसवी सन् का प्रारंभ ईसा की मृत्यु पर आधारित है। परंतु उनका जन्म और मृत्यु अभी भी अज्ञात है। ईसवी सन् का मूल रोमन संवत् है। यह 753 ईसा पूर्व रोमन साम्राज्य के समय शुरू हुआ था। उस समय उस संवत् में 304 दिन और 10 मास होते थे। उस समय जनवरी और फरवरी के मास नहीं थे। ईसा पूर्व 56 वर्ष में रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने वर्ष 455 दिन का माना। बाद में इसे 365 दिन का कर दिया। उसने महीनों के बाद दिन संख्या भी तय कर दी। इस प्रकार ईसवी सन् में 365 दिन और 12 मास होने लगे। फिर भी इसमें अंतर बढ़ता गया, क्योंकि पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करने के लिए 365 दिन 6 घंटे, 9 मिनट और 11 सेकंड लगते हैं। ईसवी सन् 1583 में इसमें 18 दिन का अंतर आ गया। तब ईसाइयों के धर्मगुरु पोप ग्रेगरी ने 4 अक्तूबर को 15 अक्तूबर बना दिया और आगे के लिए आदेश दिया कि 4 की संख्या से विभाजित वाले होने वर्ष में फरवरी मास 29 दिन का होगा। 400 वर्ष बाद इसमें 1 दिन और जोड़कर इसे 30 दिन का बना दिया जाएगा। इसी को ग्रेगरियन कैलेंडर कहा जाता है जिसे सारे ईसाई जगत ने स्वीकार कर लिया।

ईसाई संवत् के बारे में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पहले इसका आरंभ 25 मार्च से होता था परन्तु 18वीं शताब्दी से इसका आरंभ 1 जनवरी से होने लगा। इस कैलेंडर में जनवरी से जून तक के नाम रोमन देवी देवताओं के नाम पर हैं।

जुलाई, अगस्त का संबंध सम्राट जूलियस सीजर और उसके पोते अगस्टस से है। सितम्बर से दिसंबर तक के मासों के नाम रोमन संवत् के मासों की संख्या के आधार पर है, जिसका क्रमशः अर्थ है 7,8,9 और 10. इससे ईसवी सन् के खोखलेपन की पोल और ईसाई जगत की अवैज्ञानिकता जगजाहिर हो जाती है।

भारत में मासों का नामकरण

इसके विपरीत भारत में मासों का नामकरण प्रकृति पर आधारित है। यथा चित्रा नक्षत्र वाली पूर्णिमा के मास का नाम चैत्र है, विशाखा का वैशाख है, ज्येष्ठा का ज्येष्ठ है, श्रवण का श्रावण, उत्तराभाद्रपद का भाद्रपद, अश्विनी का आश्विन, कृतिका का कार्तिक, मृगशिरा का मार्गशीर्ष, पुष्य का पौष, मघा का माघ और उत्तरा फाल्गुनी का फाल्गुन मास होता है। इसी तरह भारत में 354 दिन के चान्द्र वर्ष और 365 दिन 6 घंटे, 9 मिनट 11 सेकेंड के अंतर को दूर करने के लिए हमारे ज्योतिषियों ने 2 वर्ष 8 मास 16 दिन के उपरांत एक अधिक मास या पुरुषोत्तम अथवा मलमास की व्यवस्था करके कालगणना की शुद्धता और वैज्ञानिकता बरकरार रखी है।

उपरोक्त तथ्यों के संदर्भ में यही उचित होगा कि हम सभी भारतवासी पूर्णतः वैज्ञानिकता पर आधारित अपनी युगों की वैज्ञानिक एवं वैश्विक भारतीय कालगणना का प्रयोग करें। इस कालगणना का प्रथम दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा श्री ब्रह्माजी का सृष्टि रचना का दिन होने के कारण यह वर्ष प्रतिपदा केवल हम भारतवंशियों के ही लिए नहीं, अपितु संपूर्ण सृष्टि के लिए भी पूजनीय दिन है।

इधर-उधर से जोड़-तोड़, मनगढ़ंत कल्पनाओं, मिथ्या सिद्धांतों और कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा, भानुमति ने कुनबा जोड़ा के नमूने पर बने ईसवी सन् के नववर्ष को ईसाई जगत मनाये, हम इसे क्यों मनायें? यूरोपीय ईसाई साम्राज्य के प्रभाव काल में यह ईसाई कालगणना हम पर थोपी गई थी। उस समय की मानसिक दासता के कारण हम ईसाई वर्ष को मनाते चले आ रहे हैं। यह हमारे लिए लज्जा का विषय है। आइये हम इसका परित्याग कर अपना भारतीय नववर्ष बनायें। ❐

नव सम्वत्सर सम्बन्धित मुख्य घटनाएं

■ गंगा प्रसाद 'सुमन'

सार्वभौम सम्वत्सर पर्व चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सृष्टि संवत् है, जिसे 1,96,08,53,124 वर्ष बीत चुके हैं। यह संवत् इस वर्ष 22 मार्च, 2023 बुधवार, विक्रमी सम्वत् 2080 को प्रारंभ हो रहा है। इसी दिन ब्रह्मा द्वारा कालगणना लोकात्तर सृष्टि का प्रथम सूर्योदय तथा काल विभाजन हुआ था। इस सृष्टि सम्वत् से कुछ मुख्य घटनाएं सम्बन्धित हैं जिससे इसका महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है–

- मर्यादा पुरुषोत्तम तम राम का वनवास से लौटने पर उनका राज्याभिषेक हुआ था।
- महाभारत में महाराज युधिष्ठिर का राज तिलक इसी दिन हुआ था।
- उज्जैन के चक्रवती सम्राट विक्रमादित्य ने बर्बर हूण व शक जाति को परास्त कर विजय पताका फहराई थी। विजय उत्सव के साथ विक्रम सम्वत् का शुभारंभ हुआ ।
- इन्हीं नवरात्रों में नवें दिन श्री रामचन्द्र जी का जन्म दिवस रामनवमी पर्व मनाया जाता है।
- स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने 10 अप्रैल, 1875 को आर्य समाज की स्थापना मुम्बई में की थी।
- सिखों के गुरु गोविन्द सिंह ने वैशाखी के दिन सन् 1699 में खालसा पंथ की नींव आनन्दपुर साहिब में रखी थी।
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार जी का जन्म इस दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सन् 1889 को हुआ था।
- सिंध प्रान्त के प्रसिद्ध सन्त झूलेलाल का जन्म दिवस इसी दिन हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

- 600 ईसा पूर्व वैशाखी के दिन बोध गया में बौद्ध महात्मा बुद्ध का जन्म दिन 2500 वर्ष पूर्व से मनाते आ रहे हैं।
- तमिलनाडु में इसे नव वर्ष दिवस के रूप में 'चिताराई परवि' के नाम से बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।
- मणिपुर में यह नववर्ष 'चेरोवा' नाम से विख्यात है जिसे परम्परागत रूप से मनाया जाता है।
- 13 अप्रैल, 1919 को वैशाखी की उस दिन की घटना स्मरण दिलाती है, जब अमृतसर के जलियावाला बाग में अंग्रेजी सरकार द्वारा पारित रोलेट एक्ट के विरोध प्रदर्शन के लिए निहत्थे भारतीयों को भयंकर गोलियों से भून दिया गया था।
- पंजाब में तो चिरकाल से वैशाखी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाते आ रहे हैं। वैशाख चढ़ते ही गेहूं की फसल पक जाती है। अपनी मेहनत का फल देखकर किसान का मन मयूर नृत्य करने लगता है जो भांगड़ा के रूप में स्वर मदमसा हवा में गूज उठते हैं।

हमें चाहिए इस सृष्टि संवत् को नव वर्ष के रूप में सहर्ष स्वीकार करें और दूसरों को भी इसे मनाने के लिए प्रेरित करें। बधाई व शुभकामनाओं के कार्ड हिन्दी में छपवा कर सम्बन्धियों को प्रेषित करें। घर, परिवार, व्यवसाय, संस्थान, पूजा स्थल, बाजारों पर दीपमाला से प्रकाश किया जाए। इस दिन यज्ञ, सत्संग, कलाएं, भाषण, लेखन व खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करें। विद्वानों तथा पूर्वजों का सम्मान कर भेंट वस्तु अर्पित की जाएं। सृष्टि सम्वत् को स्नेहपूर्वक आत्मीयता के साथ हर्षोल्लास के साथ मनायें वैदिक पम्परा का सम्मान करें। ❐

प्रतिपदा से बदलने लगती है प्रकृति

■ पं. बाबूलाल जोशी

हमारे त्रिकालज्ञ ऋषियों द्वारा काल की सूक्ष्म और बड़ी से बड़ी इकाइयों का निर्माण वैज्ञानिक चिन्तन के आधार पर किया गया है। यह गणना ऋग्वेद, यजुर्वेद, मनुस्मृति और पुराणों में एक जैसी है। बाद में विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिकों जैसे आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त ने भी इनका प्रतिपादन अपने ग्रन्थों में इसी आधार पर किया है।

हेमाद्रि के कथनानुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत रचना प्रारम्भ की। अत: प्रतिपदा चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रथमा तिथि सृष्टि रचना का प्रथम दिवस है। भास्कराचार्य ने भी 'सिद्धान्त शिरोमणी' में लिखा है कि चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में सूर्योदय की प्रथमा से दिन, मास, वर्ष, युग एक साथ आरम्भ हुए हैं।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रकृति भी अपना रूप बदलना प्रारम्भ करती है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ज्योतिष की वह वैज्ञानिक संरचना है जिसके प्रवेश होते समय अर्थात् सूर्य की प्रथम किरण की गणना से वर्ष भर की प्राकृतिक व्यवस्थाओं का तथा ग्रह-नक्षत्र की गतिविधियों का आकलन पंचाग द्वारा जन सामान्य को उपलब्ध कराया जाता है।

यह अधिक उल्लेखनीय है कि सम्राट विक्रमादित्य द्वारा आक्रमणकारी शकों से पराजित दलित भारत के लिये परित्राता का कार्य किया गया। थोड़े समय में ही विक्रमादित्य अपने पराक्रम से शकों की आक्रमण शक्ति को समूल नष्ट करके वे एक सार्वभौम सम्राट के पद पर अभिषिक्त हुए और उन्होंने विधिवत् विक्रम संवत् आरम्भ किया। जिस समय सिंहासन पर वे बैठे और विक्रम संवत् की घोषणा की गयी उस समय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा थी। अत: विक्रम सम्वत राष्ट्रीय संवत् है।

विक्रमादित्य द्वारा अवन्तिका में सिंहासनारूढ होकर अनेक राज्यों को सम्मिलित किया गया अत: संघीय गण राष्ट्र प्रणाली के वे प्रथम उद्घोषक थे जिन्होंने पराजित राज्यों का भी मन जीत लिया था तथा आक्रमणकारी शकों को समाज में स्थान देकर अतुल कीर्ति प्राप्त की थी।

इस वर्ष हमें 28वें कलियुग के 5111वें वर्ष और विक्रम संवत् के 2066 शालिवाहन शाक के 1931 वें वर्ष में 27 मार्च शुक्रवार को प्रवेश कर रहे हैं। चूँकि यह ब्रह्मा द्वारा घोषित सर्वश्रेष्ठ तिथि है। अत: इस तिथि पर नववर्ष का स्वागत करने का विधान साम्राज्य लक्ष्मी पीठिका नामक ग्रन्थ में कहा गया है। तदानुसार राजा अथवा राज्य प्रमुख (शासक) प्रथम नागरिक जनप्रतिनिध जहाँ भी हो वह जन सह-भागिता के साथ आनन्द उत्सव के रूप में नए सम्वत् का स्वागत करें।

सूर्योदय से पहले एकत्रित होकर प्रत्येक घरो पर देवालयों की भाँति ध्वज पताकाएं लहारानी चाहिए। तदुपरान्त नदी/तीर्थ/सरोवर अथवा पूजन करते हुए भुवन भास्कर सूर्य का जयकारा वाद्यवृंदों घड़ी, घंटाल, शंख ध्वनि के साथ सामूहिक दर्शन करना चारिहए। इसके बाद आचार्यो और वरिष्ठ जनों का आशीर्वाद लेते हुए सामूहित भोज उत्सव आयोजित किया जाना चाहिये।

वर्ष प्रतिपदा की तिथि प्रकृति आराधना का, शक्ति आराधना का भी पर्व है। इस तिथि से वसंती नवरात्रि की घट स्थापना प्रारम्भ होती है। इसके साथ ही देवी पूजा, (दुर्गा पूजा) की शुरुआत हो जाती है, स्वास्थ्य सुरक्षा तथा चचल मन की स्थिरता के लिए नीम की पत्तियों की, मिश्री, काली मिर्च, अजवाईन आदि के साथ प्रसाद के रूप में लेने का विधान है। यही हमारे भारतीय नववर्ष विक्रम सम्वत् का स्वागत करने की पद्धति है। ❐

भगवती ही संपूर्ण प्रकृति

■ इंदिरा मोहन

हिमालय की चोटियां हों या गंगा के पठार, विंध्याचल की घाटियां हों या कावेरी के तट, हमारे देश के सभी प्रांतों में किसी न किसी रूप में शक्ति की आराधना की जाती है। यह शक्ति, कहीं भगवान शंकर की अर्धांगिनी के रूप में जानी जाती है, तो कहीं महाकाली, तो कहीं दुर्गा के रूप में। कहीं विष्णु की पत्नी लक्ष्मी के रूप में, तो कहीं विद्या की देवी सरस्वती के रूप में जन-जन में पूजित है।

इस आद्यशक्ति को भारतीय संस्कृति की जननी कहा गया है। मातृ रूप से परमात्मा की पूजा में जो रस है, दया है, करुणा है वह अन्यत्र नहीं है। भगवती मां हैं, अपनी संतान का कल्याण करने के लिए ही वे नवरात्र का अवसर देती हैं। नौ दिन तक उपासना के माध्यम से भगवती का सान्निध्य हमारे मन की शक्तियों को सात्विकता की ओर मोड़ देता है। भगवती के दर्शन, भगवती की कथा हमारे स्वार्थ और अहंकार को शांत कर संयम और मर्यादा का विशेष आनंद प्रदान करती है। वह सबको तुष्टि देती है, सबकी तुष्टि से स्वयं भी तुष्ट होती है। इस सत्य को जानने और जीवन में उतारने के लिए ही वर्ष में दो बार नवरात्र पर्व धूमधाम से मनाया जाता है।

सिंह पर सवार भगवती मां दुर्गा का सौंदर्य दिव्य एवं अनुपम है। वे परम शक्तिपुंज, संकटनाशिनी और शत्रुमर्दनी हैं। इतना ही नहीं, वे अनेक ऋद्धि-सिद्धियों का द्वार खोलने वाली भी हैं। ये शक्तियां जब निर्माण में लगती हैं तो मनुष्य में देवत्व और धरती पर स्वर्ग उतार देती हैं, किंतु हिंसा और विनाश की दिशा में आगे बढ़कर हाहाकार मचा देती हैं। मां भगवती को मात्र मूर्ति तक सीमित करना हमारा अज्ञान ही है। उनकी सत्ता तो कण-कण में समाई है। पहाड़, नदियां, सागर, वृक्ष सब में उनकी शक्ति विद्यमान है। यह विराट जगत् उन्हीं का स्वरूप है, इस सत्य को जानकर मां की पूजा-अर्चना करना उचित है। उन्हें अहंकार रहित समता की पीठ पर स्थापित करना है। जीवन में निर्माण और विनाश, सुख और दु:ख, धूप-छाया की तरह साथ-साथ रहते हैं। मोमबत्ती स्वयं होकर सबको रोशनी देती है। बीज भी गलकर अंकुरित होता है और आगे चलकर छायादार वृक्ष बनता अत: संबंधों, हालातों के प्रति दुर्भाव रखे बिना यह अनुभव करना है कि हम सभी परमशक्तिमान देवी के हाथों की कठपुतली हैं। वे तो आपके धैर्य और सहनशीलता की समय- समय पर परीक्षा लेती रहती हैं। देवी अपनी पूजा के लिए केवल फल, फूल, मिठाई, धूप, अगरबत्ती की ही चाह नहीं करतीं, बल्कि हमारे हृदय में धैर्य, सहनशीलता, क्षमा, उदारता और सभी स्थितियों में समान बने रहने वाले पुष्पों की चाह करती हैं। देवी को प्रसाद, दूध-दही आदि चढ़ाने का उद्देश्य इतना ही है कि हम अपनी कमाई का, समय और श्रम का कुछ भाग नियमित रूप से जरूरतमंदों और परमार्थ के लिए लगाते रहें।

मां दुर्गा का चरित्र यह बताता है कि अपने को कहीं और ढूंढने की, तलाशने की जरूरत नहीं, हमारे भीतर अनंत शक्तियों का खजाना छिपा हुआ है, जो हमारे पास है हमारा अपना है। उसको ही एक महान उद्देश्य के लिए संगठित करना है, समर्पित करना है। एकांगी प्रगति तो एक पहिए की गाड़ी की तरह लड़खड़ाएगी। असंतुलन न हमारे लिए अच्छा है और न समाज के लिए। अग्नि में आग है, गर्मी है, लेकिन वह सोच नहीं सकती कि भोजन बनाए अथवा आग लगाए, यह कार्य चेतनाशक्ति करती है। भगवती इस शक्ति का ही स्वरूप हैं। हम सबमें यह शक्ति इच्छा, ज्ञान और क्रियाशक्ति के रूप में स्थित है।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नम:।।

आद्य शक्ति के नौ रूप

पुराणों में वर्णित है कि दुष्टों का दमन करने के लिए मां भगवती विभिन्न रूप धारण करती हैं देवी के ये नौ रूप इस प्रकार हैं- प्रथम शैलपुत्री, द्वितीय ब्रह्मचारिणी, तृतीया चंद्रघंटा, चतुर्थ कुष्मांडा, पंचम स्कन्दमाता, षष्ठम कात्यायनी, सप्तम महाकाली, अष्टम महागौरी और नवम सिद्धिदात्री। इस तरह विभिन्न रूपों के माध्यम से मां दुर्गा सृजन, पालन और संहार करती हुई भक्त की मनोकामना पूरी करती हैं। वे शक्ति का आधार हैं। शक्ति के बिना त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश अपने-अपने कार्यों में कैसे समर्थ हो सकते हैं? यानी, मां भगवती के पूजन से त्रिलोक के कण-कण में उपस्थित चेतनाशक्ति की आराधना कर हम आत्मोत्थान कर सकते हैं।

भगवती ही संपूर्ण प्रकृति हैं। वे ही चंडी काली, महाकाली बन असुरों का, अहंकारी एवं स्वार्थी वृत्तियों का संहार करती हैं। ऐसी मातृशक्ति, जो शांति काल में ममतामय हैं, त्यागमय हैं, अन्नपूर्णा हैं, तो आपातकाल में रक्षक, संहारक महिषासुर मर्दिनी भी हैं।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन 'नवरात्र' कहे जाते हैं। नवरात्र भारतीय गृहस्थों के लिए शक्ति-पूजन, शक्ति- संवर्द्धन और शक्ति - संचय के दिन हैं। नवरात्र में शक्ति की आराधना तथा शास्त्र - विहित व्रतादि के आचरण द्वारा हमें इन पवित्र दिनों का सदुपयोग अपने सत्व गुण को बढ़ाने और नकारात्मकता को हटाने में करना चाहिए, ताकि हम स्वार्थ की संकुचित परिधि से निकल कर समष्टि से एक हो सकें।

मां की शक्ति व्यापक है, नित्य है, निर्विकार है। प्रतिमा तो केवल उसका प्रतीक मात्र है। उसके स्वरूप दर्शन के लिए मन के द्वार खोलने होंगे, बाह्य नेत्रों से उनके सर्वकालिक, सर्वदेशीय रूप को नहीं देखा जा सकता। हम मां के रूप- लावण्य को ही निहारते रहें तब भगवती की दिव्यता समझ में नहीं आएगी। उनके नौ रूप अपूर्व निधियों से भरे हुए हैं, किंतु हम तो उनके बाह्य रूप, बाह्य पूजन में ही मग्न हो जाते हैं, भीतरी तेज, ऊर्जा, शांति, सौंदर्य को देख ही नहीं पाते। एक ओर ज्योतांवाली, शेरांवाली की दुहाई, तो दूसरी ओर नारी देह के प्रति भोग दृष्टि। एक ओर भगवती का स्वरूप मानकर कन्या पूजन करते हैं, तो दूसरी ओर कन्या भ्रूण की जन्म से पूर्व हत्या करने में संकोच नहीं करते। कैसा विरोधाभास समा गया है हमारे सामाजिक चरित्र में!

एक सच्चा उपासक सबमें परमात्मा की शक्ति का अनुभव करता है। मां के सच्चे भक्त को नारी जाति में उस शक्ति का प्रकाश देखना चाहिए। केवल मुझे ही सुख मिले, भोग मिले, यह स्वार्थी सोच न तो जगदम्बा की पूजा है, न आराधना।

जागरण की घंटियों, आरतियों के बीच भगवती मानो यही कह रही हैं- व्रत, उपवास, नियम, उपनियम और कठिन तप के साथ-साथ अब मेरी दुर्बल, दीन, साधन-हीन संतानों के संस्कारों एवं अपने आचार-विचार की शुद्धता-पवित्रता की चिंता करो। हलु-चने का प्रसाद मैं बहुत पा चुकी, लाल चुनरी और श्रृंगार भी बहुत कर चुकी, अब मेरी सृजन-शक्ति, सौंदर्य-शक्ति और ज्ञान-शक्ति को जानो-पहचानो।

वे हमारी मां हैं, तब भला मां के गुणों के विपरीत संतान कैसे हो सकती है? वास्तव में उसकी दिव्यता, पवित्रता, उदारता, सहकारिता हमारे भीतर भी है जिसकी याद दिलाने वे वर्ष में दो बार चैत्र और आश्विन माह में पूरे ऐश्वर्य और वैभव के साथ आती हैं और परहित - परमार्थ भाव के तप से प्रसन्न होती हैं। सृष्टि के आरंभ से ही आचरण हेतु संस्कार प्रदान करने वाली मां हैं, भगवती तो जगन्माता हैं, जगजननी जगदम्बा हैं। भगवती के गुणों को धारण करने पर ही भगवती की पूजा फलवती होती है, भगवती से मिलते ही पूरी सत्ता सचेतन हो उठती है। प्रकाश का आनंद प्रेम बनकर सद्भावना बांटने को उत्सुक हो जाता है। समस्त वस्तुओं में, सब जीवों में इस ज्योति की आभा दिखने लगती है। यदि हम इस प्रकार सोचना और देखना सीख लेते हैं तो वास्तव में हम सच्चे मन से देवी की आराधना कर रहे हैं। हम सबका यह सात्विक प्रयास, निश्चय ही निर्माण, सृजन की मंगलकारी शक्तियों को धरती पर उतार सकता है। तब प्रत्येक देवता का तेज पुनः संगठित होकर असद, अहंकार, अन्याय और आतंक का संहार कर विश्व को शांति के सूत्र में बांध सकता है।

(लेखिका वरिष्ठ साहित्यकार हैं)

श्रीराम जन्म के अनेक कारण

■ रमेश चंद्र अवस्थी

संसार में जहां-जहां भी परोपकारी, त्यागी एवं ज्ञानी महापुरुषों ने जन्म लिया लोगों ने अपने धर्म के अनुसार उन्हीं में भगवान को देखा। ठीक उन्हीं महापुरुषों में एक हैं हमारे पूज्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम। जिनके जन्म एवं कर्म की कथाएं किसी न किसी रूप में विदेशों में भी आदर की दृष्टि से देखी जाती हैं। कुछ लोगों का मानना है कि महर्षि वाल्मीकि ने राम को ईश्वर नहीं माना पर यदि वे ईश्वर भाव से राम को न देखते तो भला वे उनका नाम ही क्यों जपते जैसा कि रामायण में आता है।

उल्टा नाम जपत जग जाना,
वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।
जानि आदि कवि नाम प्रतापू,
भयऊ सिद्ध कर उल्टा जापू॥

यह विचार थे तुलसी कृत रामायण के। अब हम देखें कि राम के बारे में वाल्मिकीय रामायण क्या कहती है। वाल्मीकि जी नारद से पूछते हैं–

कस्य विभ्यति देवाश्च जात रोषस्य संयुगे।
(4-प्रथम सर्ग बा.का.)

किससे संग्राम में कुपित होने पर देवता भी डरते हैं, तो नारद जी कहते हैं–

इक्ष्वाकु वंश प्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतेः॥8॥

ऐसे तो इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए श्रीराम ही हैं–

विष्णु ना स दृशो वीर्ये सोम वात्प्रिय दर्शनः।

– जो कि विष्णु के समान बलवान एवं चन्द्रमा के समान मनोहर है। इसलिए नारद जी के वाक्यों से तो श्रीराम विष्णु के अवतार सिद्ध हो ही गये। इसके अलावा आगे आने वाले कथा प्रसंगों में भी कई जगह पर राम को विष्णु सदृश कहा गया एवं कुछ कथा प्रसंग भी ऐसे मिलते हैं जिनसे लगता है कि विष्णु को शाप के कारण ही राम बन कर पत्नी वियोग आदि दुख उठाने पड़े, जैसे जालंधर की पत्नी वृन्दा के द्वारा विष्णु को शाप नारद के द्वारा विष्णु को मानवीय शरीर धारण कर पत्नी वियोग जनित दुख उठाने का शाप इसे अलावा भी बाल्मिकी रामायण में एक कथा और भी आती है, जिसके अन्तर्गत दुर्वासा दशरथ जी को राम जन्म के कारण के बारे में बताते हुए कहते हैं कि एक बार देवासुर संग्राम में देवताओं द्वारा पीड़ित हुए राक्षसों को भृगु पत्नी ने अपने आश्रम में शरण दे दी जिसके कारण क्रोधित होकर विष्णु ने भृगु पत्नी का शिर काट दिया। फिर क्या था भृगु ने भी क्रोधित होकर विष्णु को शाप दिया कि–

तस्मात् त्वं मानुषे लोके जनिष्यसि जनार्दन।
तत्रपत्नी वियोग त्वं प्राप्यषसे बहुवार्षिक॥
(सर्ग 51 बा.राम. उ.का.)

तुम भी मनुष्य लोक में जन्म लेकर पत्नी वियोग सहोगे इसी कारण आपके पुत्र साक्षात् विष्णु ही हैं। पर इन्हें पत्नी वियोग तो उठाना ही पड़ेगा। इसके अलावा भी राम अवतार के अनेक कारण हैं। जैसे–

जब-जब होही धर्म की हानि,
वाढहि असुर अधम अभिमानी।
तब-तब प्रभु धरि मनुज शरीरा,
हरहि कृपा निधी सज्जन पीरा॥

जन्म एवं (अवतार)वाद का नाम सुनते ही कई बार माता पार्वती की तरह ही हमारे मन में भी कई तरह की शंकाएं उठती हैं। क्योंकि उनके विचार के अनुसार जो जन्म लेता है वह ब्रह्म नहीं कहला सकता (जो नृप तनय तो बह्मकिमि) ऐसा संदेह पाकर शिव कहते हैं कि (राम सो परमात्मा भवानी, तहभ्रम अति अविहित तव वानी) इस तरह समझा देते हैं। तब पार्वती जी कहती हैं कि (तुम्ह कृपालु सब संशय हरेऊ, राम स्वरूप जान मोहि परेऊ) वस्तुतः जन्म लेने पर भी अवतार इसलिए अजन्मा माना जाता है कि जन्म लेने से पूर्व जन्म लेने वाला पहले ही उद्घोष करते हुए अपनी उपस्थिति दिखा देते हैं। जैसे (तुमहि लागि धरिहउ नर देहा) इसीलिए तो जन्म लेना उनके लिए एक लीला मात्र ही हो जाती है। और फिर ऐसा भी है कि स्वाभाविक जन्म लेने वाला पुरुष अपनी जवानी में ही कुछ कर पाता है। बालकपन

में तो वह अन्य बालकों की तरह ही होता है। लेकिन अवतारी पुरुष बालकपन तो दूर रहा जन्म लेते ही अपना प्रभाव छोड़ते हैं जैसे- भगवान राम एवं कृष्ण के जन्म लेते ही माता-पिता को ब्रह्मानुभूति हुई। इसके अलावा जहां स्वाभाविक जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रकृति के वश में होता है वहीं अवतारी पुरुष (जन्म कर्म च में दिव्यम।) एवं (प्रकृतिम स्वामधिष्ठाय सम्भवामी युगे-युगे) के आधार पर होता है। उन्हीं अवतारों में से एक है राम अवतार, जो कि साक्षात् विष्णु का अवतार कहलाता है। जिसमें उनकी अपनी इच्छा निहित है।

(विप्रधेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार, निज इच्छा निर्मित तुनु मायाबिन गोपार) राम अवतार के संबंध में वाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है कि दशरथ जी महाराज ने अश्वमेध यज्ञ पूर्ण करने के उपरान्त पुत्रेष्टि यज्ञ की दीक्षा ली। यज्ञ के आचार्य श्रृंगी ऋषि थे। सभी देवता यज्ञ में अपना-अपना भाग लेने आये थे। वहीं पर उन सभी ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि हे ब्राह्मण आपके वर से प्रभावित होकर रावण नामक राक्षस ने सारे त्रिलोकी को परेशान कर रखा है और वह सभी के लिए अवध्य है। कुछ समय बाद वहीं पर भगवान विष्णु भी आते हैं। ब्रह्मा जी सभी देवताओं के साथ विष्णु की प्रार्थना करते हैं एवं रावण वध के लिए कहते हैं। अवतार लेने का आश्वासन देकर विष्णु अन्तर्ध्यान हो जाते हैं। इधर पुत्रेष्टि यज्ञ सफल हो जाता है। यज्ञ की खीर रानियों में बांट दी जाती है। रानियां गर्भ धारण करती हैं। द्वादस मास बीतने पर (ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमि को तिथौ) नवमी तिथी मधुमास पुनीता-शुक्ल पक्ष अभिजित हरि प्रीता। चैत्र शुक्ल नवमी तिथि कर्क लग्न में पुनर्वशु नक्षत्र में सूर्य, मंगल, शनि, गुरु, शुक्र की उच्च स्थिति में गुरु चन्द्र लग्न में ऐसी ग्रह स्थिति में श्रीराम का जन्म होता है। ऐसे बालक रूप राम की हम सभी वन्दना करते हैं।

श्रीराम की भगवत्ता

राम के कुछ बड़े होने पर विश्वामित्र जी मारीच और सुबाहु के वध के लिए श्रीराम को लेने दशरथ जी के पास पहुंच जाते हैं। तो दशरथ जी विश्वामित्र जी से कहते हैं कि (उन सोडश वर्षों में रामो राजीव लोचन, न युद्ध योग्तामस्य पश्यामि सह राक्षसे) वा.रा. (1-20-2) मेरे राम अभी सोलह साल के भी नहीं हुये हैं। ये राक्षसों से कैसे लड़ेंगे। तब विश्वामित्र जी कहते हैं कि (न चै तो राघवादन्यो हन्तु मुत्सहते पुमान) इन रघुनन्द के अलावा उन राक्षसों का कोई भी नहीं मार सकता। क्योंकि उन पर रावण का हाथ है। रावण ही उन्हें यज्ञ विध्वंस के लिए भेजता है। जब रावण का नाम सुना तो दशरथ जी कहते हैं कि नहित शक्तोऽस्मि संग्राम स्थातुम तस्य दुरातत्मन। रावण के साथ युद्ध करने में मैं भी समर्थ नहीं हूं। फिर मेरे राम क्या कर सकते हैं। विश्वामित्र जी कहते हैं कि सत्य पराक्रमी राम क्या है यह तो मैं जानता हूं या वशिष्ठ जी या तपस्वी लोग। इसलिए तुम राम को निसंकोच मेरे साथ भेजो। श्रीराम विश्वामित्र के साथ में चल देते हैं। 15 साल की अवस्था में श्रीराम ने ताड़का को मारा। धनुष तोड़ा। परशुराम जी तक को राम के सामने नतमस्तक होना पड़ा। सात ताड़ के पेड़ों को एक ही वाण से वेधना। बाली वध समुद्र पर चार सौ कोस का पुल बांधना। दसशिष रावण पर विजय पाना, ये सारे काम मनुष्य से परे ही थे। वैसे वाल्मीकि रामायण में बहुत से श्लोक ऐसे हैं जिनसे प्रमाणित होता है कि राम बिष्णु के अवतार हैं। जैसे- सर्वाल्लोकान् सुसंहृत्य सभूतान सचराचरान्, पुनरेव तथा स्त्रष्टु शक्तो रामो महायशा।। (बा.रा.सु. 51-3-39)

इसके अनुसार हनुमान जी रावण को लंका में समझाते हैं कि राम सारे चराचर को विध्वंश करके नये सिरे से रचने की क्षमता रखते हैं। अक्षरं ब्रह्म सत्यं च मध्ये यान्ते च राघव, लोकानां त्वं परो धर्मो विस्वक्सेनश्चर्भुज।। (यु. का. सर्ग 117, श्लोक 14)

सीता जी की अग्नि परीक्षा के बाद स्वयं ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे रघुनन्दन आप अविनासी परमं ब्रह्म हैं। मध्य और अंत में आप ही हैं एवं आप ही साक्षात् चारभुजाधारी विष्णु हैं। इसलिए तो तुलसीदास जी ने भी श्रीराम को माया मनुष्यं हरि-कहकर के पुकारा। श्रीराम के शासन में धर्म के चारों चरण सत्य, अहिंसा, पवित्रता एवं त्याग विद्यमान थे। तभी तो राम के राज्य में प्रजा निश्चिंत रहती थी। दैहिक दैविक भौतिक तापा- राजा नहीं काहुहि व्यापा। सिंहासनारूढ़ होने के उपरांत भी श्रीराम ने अपना सारा समय परोपकार में ही लगाया। इसलिए आज तक हम उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से भी जानते हैं क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में सदाचार एवं मर्यादा को ही स्थान दिया। इन्द्रिय सुख के लिए कभी भी धर्म का त्याग नहीं किया। श्रीराम का स्वभाव बहुत ही दयालु था। महाबलवान होते हुए भी क्षमाशील थे, नीतिज्ञ थे, सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर थे, अत्यंत त्यागी थे। किष्किंधा को जीतकर सुग्रीव को सौंप दिया। लंका को जीतकर विभीषण को दे दिया। श्रीराम बहुत संयमी थे। संयम में न रहने पर वे अपने भाई को भी टोकते थे। मधुरभाषी थे। ब्राह्मण भक्त थे। भक्तों के भय निवारक थे। सर्वश्रेष्ठ उच्च चरित्र राजनायक के रूप में महात्मा ही थे। इसीलिए तो नारद जी से जिनकी प्रशंसा सुनकर वाल्मीकि महर्षि को भी रामायण नामक महाकाव्य की रचना करनी पड़ गई। इसके अलावा भी बाद में पैदा हुये बहुत से कवियों का दिल भी राम ने जीता।

क्या कबीरदास, क्या मलुक दास, केसव दास, सूरदास, तुलसीदास, इतना ही नहीं रहीम खान खाना भी राम भक्ति के रंग में रंग गये। वो लिखते हैं कि– रहिमन धोखे भाव से मुख से निकसे राम, पावत पूरन परम गति कामादिक को धाम। ❐

होली

■ **आचार्य मायाराम पतंग**

कान्हा बरसाने में आ जइयों, खेलेंगे मिलकै होली।
सब रंग गुलाल संग ल्यइयों, अपने ग्वालों की टोली।।

सखा मनसुखा श्रीदामा, भैया बड़े श्री बलरामा।
हाथों में पिचकारी ल्यइयो, फिर खूब मचैगी होली।।
कान्हा बरसाने में .....

हम गोपी बरसाने की, राह तकें तेरे आने की।
लला पौ फटते ही आ जइयो, जी भर खेलेंगे होली।।
कान्हा बरसाने में .....

बरसाने की सब छोरी, दिखेंगी राधा गोरी।
करके पहचान ढूंढ ल्यइयो, नाय पावै राधा भोली।।
कान्हा बरसाने में .....

गाल सांवरे लाल बनावैं, बना मोहिनी नाच नचावैं।
मुरली मधुर सुना जइयों, ब्रजगोपिन के हमजोली।।
कान्हा बरसाने में .....

ऐसो रंग मचैगो प्यारे, गली गली रंग के फौवारे।
फिर जमुना जी में न्हा जइयो, जल में भी मस्ती घोली।।
कान्हा बरसाने में ..... ❐

मान और मर्यादा की रक्षा का उत्सव रामनवमी

■ नीतू कुमारी

भगवान श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। शास्त्र कहते हैं कि श्रीविष्णु इस धरती पर राक्षसों के राजा रावण को मारने के लिए राम के रूप में प्रकट हुए थे।

श्रीराम ने अपने जीवन की हर अवस्था में अपने चरित्र की उदारता और मर्यादा के पालन का परिचय दिया। आत्मबलिदान, गुरुजन, बड़े-बूढ़ों का सम्मान तथा वीरता-यही श्रीराम के गुण हैं। वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' हैं, अर्थात् मर्यादा रखने में पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ। आश्चर्य नहीं कि श्रीराम का जन्मदिन, अति उत्साह व श्रद्धा से मनाया जाता है। श्रीराम नवमी चैत्र मास (मार्च-अप्रैल) के शुक्ल पक्ष के नौवें दिन मनाई जाती है। भगवान श्रीरामचन्द्र जी बारह कलाओं से पूर्ण अवतार माने जाते हैं। उन्होंने मानवता को आदर्श के उतुंग शिखर पर खड़ा किया। उन्होंने दुष्टता का दलन कर सज्जनता को पुनर्स्थापित करने का कार्य किया। उन्होंने धर्म ध्वजा फहराते हुए मानव देह में उस हर एक कर्तव्य का पालन किया, जो एक सामान्य मनुष्य के लिए होता है। अगस्त्य संहिता के अनुसार चैत्र शुक्ल नवमी के दिन, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में जब सूर्य अन्य पांच ग्रहों की शुभ दृष्टि के साथ मेष राशि में विराजमान थे, तभी साक्षात् भगवान् श्रीराम का माता कौशल्या के गर्भ से प्राकट्य हुआ।' वाल्मीकि रामायण में उल्लेख है कि चैत्र शुक्ल नवमी, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न में जबकि सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र - ये पांच ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान में विद्यमान थे तथा लग्न में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति विद्यमान थे, तब श्रीराम का जन्म हुआ।

संसार का महान ग्रंथ रामायण

कवि वाल्मीकि की अद्भुत रचना रामायण, संसार की महानतम् साहित्यिक व काव्यात्मक कृति है। इसे आदिकाव्य अर्थात् प्राचीनतम साहित्यिक कृति भी कहा गया है। रामायण का अनुवाद कई भाषाओं में किया गया है। इस महान ग्रंथ से संबंधित नाटक-नाटिकाएं, नृत्य तथा कथाएं आज भी पूर्वी एशिया में प्रस्तुत की जाती हैं। नारदजी से महर्षि वाल्मीकि ने पूछा- मुने! इस संसार में गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता, दृढ़प्रतिज्ञ, सदाचार से युक्त, समस्त प्राणियों का हितसाधक, विद्वान, सामर्थ्यशाली, एकमात्र सुन्दर, मन पर नियंत्रण रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला, कांतिमान और किसी की निन्दा नहीं करने वाला कौन है? संग्राम में कुपित होने पर जिससे देवता भी करते हैं। तब नारदजी ने उत्तर दिया- इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए एक ऐसे पुरुष हैं, जो लोगों में राम नाम से विख्यात हैं। ऐसे श्रीराम की कथा का गायन महर्षि वाल्मीकि ने नारद के कहने से किया। तुलसीदास ने उसी राम कथा को जनभाषा अवधि में 'रामचरितमानस' के रूप में प्रस्तुत कर जन-मन को रंजित कर दिया।

श्रीराम नवमी महोत्सव

श्रीराम का जन्म दोपहर से पहले हुआ था। इसलिए मंदिरों में पूजा दोपहर पूर्व की जाती है। वैदिक मंत्रों व ऋचाओं द्वारा बड़े-बड़े यज्ञ-हवन किए जाते हैं। प्राय: श्रीराम नवमी, नौ दिन तक लगातार मनाई जाती है। कई लोग इन दिनों उपवास कर केवल फलाहार करते हैं।

धार्मिक जुलूस व शोभायात्रा

उत्तर भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय रामनवमी को श्रीराम परिवार की शोभायात्रा की झांकी निकाली जाती है। इस यात्रा का मुख्य आकर्षण एक सजा-धजा रथ होता है, जिसमें चार व्यक्ति राम, उनके भाई लक्ष्मण, सीता तथा रामभक्त हनुमान की वेशभूषा धारण कर विराजमान होते हैं। कई अन्य लोग राम की सेना के वस्त्र धारण कर इस रथ के साथ-साथ चलते हैं। यह यात्रा अत्यंत जोशपूर्ण एवं उत्साह से भरी होती है,

जिसमें लोग श्रीराम राज्य के गुणों की प्रशंसा कर ऊंचे स्वरों में नारे लगाकर करते हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्रीराम नवमी उत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों को अत्यन्त महत्ता दी जाती है। श्रीरामचरितमानस का गीतमय व्याख्यान, वाल्मीकि रामायण का संस्कृत तथा स्थानीय भाषाओं में नौ दिनों तक पाठ होता है। लोग प्राय: स्थानीय भाषाओं में भी श्रीराम के गुण गाते हैं। श्रीराम कथा कई स्थानों पर पूरे महीने चलती है। व्यावसायिक गवैए, नर्तक व शास्त्रीय संगीतविद् इन सभी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

धार्मिक प्रवचनों के दौरान विशेष महत्व रखने वाले वे प्रसंग हैं, जिनमें सीताजी का विवाह श्रीराम से होता है तथा जब श्रीराम का राजतिलक किया जाता है। इन प्रसंगों के दौरान संगीतज्ञों का सम्मान वस्त्र व अन्य भेंट द्वारा किया जाता है। श्रीप्रभु को विशेष प्रसाद भेंट किए जाने के बाद सभी श्रोतागण इसी प्रसाद को ग्रहण करते हैं। ❐

अनूठी सेवा

■ आशीष शुक्ल

संत स्वभाव मानव धर्म में ऐसा पगा होता है जिसे समझना बड़ा ही कठिन है। उस स्वभाव द्वारा मानव सेवा का आस्वादन का अनुमान सामान्य जन के लिए मुश्किल है। इसीलिए संत अलबेले लगते हैं। उनके कार्य भी अनूठे प्रतीत होते हैं। दक्षिण भारत के महान संत एकनाथ जी भी ऐसे ही मानवीय गुणों की मिसाल थे। उनका जीवन भी बड़ा अद्भुत और अनुकरणीय है।

अपने गुरुदेव जनार्दन स्वामी के शरणागत जब एकनाथ जी हुए तो गुरुदेव ने उन्हें मंदिर के धन का हिसाब-किताब रखने का कार्य भार सौंपा। एक रोज उनसे कुछ गड़बड़ी हुई और एक पाई का हिसाब न मिल सका। एकनाथ जी चिंतित हो उठे। सारी रात वह पाई-पाई का हिसाब मिलाते रहे। अन्तत: रात के अंतिम प्रहर में उस एक पाई का हिसाब मिल ही गया। एकनाथ जी प्रसन्न होकर ताली बजाने लगे। ताली की आवाज से जनार्दन स्वामी की नींद टूट गई। वह चकित होकर एकनाथ जी को देखने लगे। लेकिन एकनाथ जी से सारी घटना जानकर वह अत्यंत प्रसन्न हुए और बोले, ''ऐसी ही ईमानदारी से की गई आंतरिक साधना से जीवन का परम लक्ष्य सरलता से प्राप्त किया जा सकता है।''

अगली सुबह ही जनार्दन स्वामी ने एकनाथ जी को आत्मानुसंधान के मार्ग पर अग्रसर होने हेतु दीक्षा प्रदान की। एक रात थी सर्दियों की और घनघोर वर्षा हो रही थी। एकनाथ जी और उनकी पत्नी भोजन के बाद विश्राम कर रहे थे। साथ ही भगवत चर्चा भी चल रही थी। सहसा ही किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। एकनाथ जी ने दरवाजा खोला। चार ब्राह्मण खड़े थे। रात्रि और वर्षा के कारण आश्रय पाने की आशा से आए थे। एकनाथ जी ने अतिथियों का स्वागत किया। ब्राह्मणों की स्थिति देखकर स्वत: ही अनुमान लगाया जा सकता था कि वे थके-हारे और भूख से व्याकुल थे। उनके सारे वस्त्र भीग चुके थे। ठंड से वह ठिठुर रहे थे।

एकनाथ जी और उनकी पत्नी चिंतित थे। घर में चूल्हा जलाने भर को भी ईंधन नहीं था फिर अतिथियों के तापने हेतु वे अलाव कहां से लाते। बारिश की इस रात्रि में सूखी लकड़ियों की उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी।

अकस्मात् ही एकनाथ जी के चेहरे पर मुस्कान आ गई। शायद उन्हें कोई युक्ति सूझी थी। वह उठकर दूसरे कमरे में आ गए और अपनी चारपाई की बान शीघ्रता से खोलने लगे। उनकी पत्नी हैरान होकर उनके इस कारनामे को चुपचाप देखती रहीं। जल्द ही वह चारपाई से पाये और पाटी अलग करने में सफल रहे।

कुछ देर बाद रसोई से स्वादिष्ट व्यंजन पकने की सुगंध आ रही थी और ठंड से ठिठुरते ब्राह्मण अलाव की गर्माहट से राहत पा रहे थे लेकिन चूल्हे और अलाव में ईंधन के रूप में जल रहे थे एकनाथ जी की चारपाई के पाये और पाटी। इन सब बातों से बेखबर एकनाथ जी ब्राह्मण अतिथियों को संतुष्ट कर आनन्द सागर की असीम गहराइयों में गोते लगा रहे थे। ❐

रामनवमी पर विशेष

राम सगुन भए भगत प्रेम बस

■ सुभाष चन्द्र बग्गा

कैलाश पर्वत के शिखर पर शंकर जी और उमाजी का संवाद चल रहा था। उमाजी की जिज्ञासा थी- यह सत्य है कि श्री रामचन्द्र जी ब्रह्म हैं, चिन्मय हैं, अविनाशी हैं, सबसे रहित और सबके हृदयरूपी नगरी में निवास करने वाले हैं। फिर हे नाथ! उन्होंने मनुष्य का शरीर किस कारण से धारण किया ?

राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी।
सर्ब रहित सब उर पुर बासी।।
नाथ घरेउ नरतनु केहि हेतु।
मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतु। 1/120(3,4)

शंकर जी ने अनेक कल्पों का सूत्ररूप परिचय दिया और बताया कि भगवान प्रत्येक कल्प में अवतार लेते हैं और प्रत्येक कल्प में अवतार के कारण विचित्र होते हैं।

वास्तव में परमात्मा के प्राकट्य का मुख्य आधार प्रेम है। श्री राम परम विशुद्ध परात्पर सच्चिदानन्द घन परब्रह्म परमात्मा हैं। 'सत्' का अर्थ है- सदा एक समान रहने वाला, अविनाशी। जिसकी सत्ता सदा एक-सी बनी रहती है। जो सदा प्रकाशमय ज्ञानस्वरूप है, जिसे कोई प्रकाशित नहीं करता है बल्कि जो स्वयं प्रकाशित होता है, उसे 'चित' कहते हैं। 'आनन्द' का अर्थ है - जहाँ सर्वसुख हो, इच्छा मात्र से सब कुछ प्राप्त हो जाए, किसी प्रकार का अभाव न हो। सत, चित्- आनन्द मिलकर 'सच्चिदानन्द' होता है। श्री राम जी सदा रहने वाले, अखण्ड ज्ञानस्वरूप परमानन्द सिन्धु हैं। संत और सुरों का हित तथा भक्तों पर अतु की कृपावश मानव देह धारण करते हैं और जैसे संसारी लोग - प्राकृत जन कहते करते हैं, वैसा ही आपका आचरण होता है।

भगवान् शंकर अवतार के हेतुओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जब जब धर्म का ह्रास होता है और नीच, अभिमानी अधर्मी बढ़ते हैं और ऐसा अन्याय करते हैं जो वर्णन नहीं किया जा सकता तथा ब्राह्मण, गाय, देवता और पृथ्वी पीड़ित होते हैं, तब तब दयासिन्धु प्रभु तरह-तरह के शरीर धारण कर सज्जनों की पीड़ा हरते हैं।

जब जब होई धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी।।
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी।
सीदहिं बिप्र धेनु सुर घरनी।।
तब तब प्रभु धरि निनिष सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।। 1/121(3,4)

गीता में भी भगवान् श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात साकाररूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।। 4/7

भगवान शंकर आगे कहते हैं कि प्रभु असुरों को मारकर देवताओं को स्थापित करते हैं, अपने वेदों की मर्यादा रखते हैं और जगत में अपने निर्मल उज्जवल यश को फैलाते हैं।

असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस रामजन्म कर हेतु।।1/121

इसमें प्रभु के चार कार्य बतलाये। असुर मारि- असुर पृथ्वी का भार हैं। उनको मारकर पृथ्वी का काम किया अर्थात उसका भारउतारा। थापहिं सुरन्ह अर्थात देवताओं को अपने लोक में बसाया, यह देवकार्य किया। राखहिं निजश्रुति सेतु अपने वेदों की मर्यादा रखते हैं अर्थात अपना काम करते हैं। जग बिस्तारहिं बिसद जस-संसार में यश फैलाते हैं, यह संतों का कार्य करते हैं। अवतार लेकर यह चार कार्य करते हैं।

श्री रामचरित मानस के अनुसार अवतार के प्रयोजन

में धर्म की स्थापना और राक्षसों का विनाश- यह तो प्रभु की इच्छा मात्र से सहज ही संभव है। अतः अवतार का प्रमुख हेतु भक्तों के हित के लिये शरीर धारण करना है।

सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं।
कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं।। 1/122(1)

यही कारण है कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने आरम्भ में ही निर्गुण ब्रह्म के सगुण रूप में अवतरण के मुख्य प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए कहा है- जो परमेश्वर एक है, जिनकी कोई इच्छा नहीं, जिनका कोई रूप नहीं और नाम नहीं, जो अजन्मा, सच्चिदानन्द और परम धाम है और जो सब में व्यापक एवं विश्वरूप है, उन्हीं भगवान ने शरीर धारण करके नाना प्रकार की लीला की है और वह लीला केवल भक्तों के हित के लिये ही है।

ब्यापक विश्वरूप भगवाना।
तेहिं धरि देह चरित कृत नाना।।
सो केवल भगतन हित लागी।
परम कृपाल प्रनत अनुरागी।।

श्री राम कथा के आदिवक्ता भगवान् शिव कहते हैं कि जो ब्रह्म निर्गुण निराकार अव्यक्त और अजन्मा है वही भक्तों के प्रेमवश सगुण हो जाता है।

अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।

मुनि याज्ञवल्क्य जी ने मानस में मुनि भरद्वाज को बतलाया कि भगवान शंकर सती को राम अवतार के सन्दर्भ में कहते हैं-

मुनि, धीर, योगी और सिद्ध निर्मल चित से जिनका ध्यान करते हैं और वेद पुराण और शास्त्र 'नेति नेति' कहकर जिनकी कीर्ति गाते हैं, उन्हीं सर्वव्यापक, समस्त ब्रह्माण्डों के स्वामी मायापति ब्रह्मरूप भगवान श्री राम ने भक्तों के हित के लिये अपनी इच्छा से रघुकुल मणि के रूप में अवतार लिया है।

मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं।।
सोइ रामु ब्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी।
अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुल मनी।।1/51

काकभुशुण्डि जी का भी यही कहना है कि भगवान श्रीराम ने भक्तों के हित के लिये राजा का शरीर धारण किया और साधारण मनुष्यों के से अनेकों पावन चरित्र किए।

भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप।
किये चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप।। 7/72

इस प्रकार दैन्य घाट के वक्ता गोस्वामी तुलसीदास जी, ज्ञान घाट के आचार्य भगवान् शिवजी, कर्मकाण्ड घाट के वक्ता मुनि याज्ञवल्क्य जी तथा उपासना घाट के वक्ता काकभुशुण्डिजी अपने अपने श्रोताओं की शंका को दूर करते हुए एक मत से घोषणा करते हैं कि जो ब्रह्म अगुण, अरूप, अव्यक्त, अज और निराकार है वह भक्तों के प्रेमवश निर्गुण से सगुण, अरूप से रूपवान, अव्यक्त से व्यक्त, अज से शरीरधारी और निराकार से नराकार हो जाता है।

मानस के चारों मुख्य वक्ता ही नहीं बल्कि अन्य ऋषि, मुनि आदि भी श्री राम के अवतार का प्रमुख हेतु मक्तप्रेम ही मानते हैं।

श्री राम कथा के आदि रचयिता मुनि वाल्मीकि जी मानस में ऐसा ही कहते हैं कि हे राम! आपने देवता और संतों के कार्य के लिये दिव्य नर तन धारण किया है- जर तनु घरेहु संत सुर काजा।

गुरु बृहस्पति भी इन्द्र को उपदेश देते हुए कहते हैं कि गुणरहित निर्लेप, मानरहित और सदा एकरस भगवान श्री राम भक्त के प्रेमवश ही सगुण हुए हैं।

अगुन, अलेप, अमान एकरस।
राम सगुन भए भगत प्रेम बस।।

श्री राम मानस में इन दिव्य पुरुषों के वचनों की पुष्टि अपने वचनों से करते हैं। वे विभीषण के प्रति कहते हैं कि विभीषण सरीखे संत जो सगुणोपासक, परहित नित, नीति निरत और द्विजपद प्रेमी हैं, वे मेरे अतिशय प्रिय हैं और मात्र ऐसे ही संतों के लिये मैं देह धारण करता हूँ।

तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे।
घरउँ देह नहिं आन निहोरे।।

गोस्वामी तुलसीदास जी भी इसी की पुष्टि करते हुए कहते हैं कि जो सर्वव्यापक, मायारहित, निर्गुण, विनोदरहित और अजन्मा ब्रह्म है वही प्रेम और भक्ति के वंश कौशल्या जी की गोद में खेल रहे हैं।

ब्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
सो अज प्रेम मगति बस कौसल्या के गोद।। ❐

महापुरुषों के महापुरुष

■ आचार्य मायाराम पतंग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज संसार का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। हिन्दू समाज को संगठित करने का अत्यन्त कठिन कार्य संघ ने संभव किया है। इस महान संस्था के संस्थापक थे डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार। इनका जन्म भारतीय नववर्ष के प्रथम दिन वर्ष प्रतिपदा (सन् 1889) को नागपुर में एक ब्राह्मण परिवर में हुआ था। इनके पिता श्री बलिराम पन्त हेडगेवार पुरोहित कर्म से परिवार का निर्वाह किया करते थे। इनके दो बड़े भाई थे- महादेव जी और सीताराम जी हेडगेवार। महादेव जी को व्यायाम एवं कुश्ती का शौक था। अत: बचपन से ही इन्हें भी व्यायाम का शौक रहा। इसके साथ पढ़ने में भी इनकी गहरी रुचि थी।

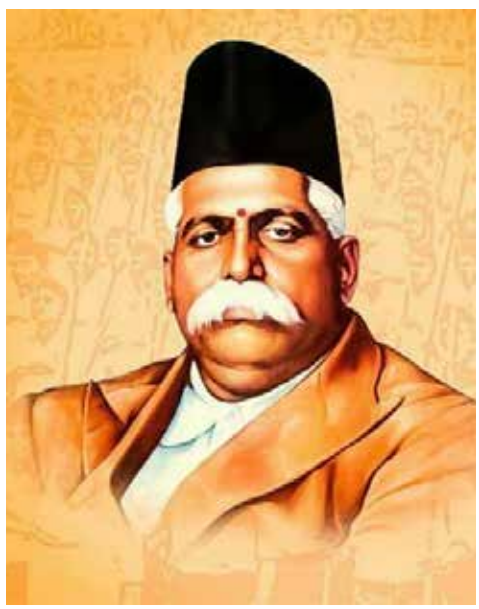

एक शिक्षक के घर ये पढ़ने जाते थे। दो-तीन अन्य छात्र भी वहां पढ़ते थे। अंग्रेजी राज्य के प्रति इनके मन में भारी रोष था। एक दिन साथी बच्चों के साथ सलाह बनाई कि सामने किले पर जो यूनियन जैक (ब्रिटिश झंडा) फहरा रहा है, उसे हटाकर हम भारतीय भगवा झंडा फहरा दें। एक दिन अध्यापक महोदय कहीं गए हुए थे तो इन्होंने ठीक अवसर जानकर निश्चय किया कि हम एक सुरंग बनाकर किले में पहुचेंगे। इसी विचार से कमरे में खुदाई करनी शुरू कर दी। अध्यापक महोदय आए तो उन्होंने समझाया कि इतनी दूर तक ना तो सुरंग बनाना आपकी क्षमता में है और ना यूनियन जैक को उतारना संभव है।

बाल्यकाल से ही केशव को लगता था कि हमारे देश पर अंग्रेज क्यों राज कर रहे हैं। एक बार महारानी विक्टोरिया के जन्मोत्सव पर विद्यालय में बच्चों को मिठाई बांटी गई। जब पूछने पर केशव को यह पता चला कि मिठाई का वितरण रानी विक्टोरिया के जन्म दिन पर किया गया है तो केशव ने अपना मिठाई का दोना कूड़े में फेंक दिया और कहा- वह रानी हमारे देश की है ही नहीं तो हम उसके जन्मदिन पर खुशी क्यों मनाएं?

इसी प्रकार जब वे नौंवी कक्षा में थे तो अँग्रेज इंस्पेक्टर द्वारा नील सिटी विद्यालय निरीक्षण आयोजित किया गया । प्रधानाचार्य ने उनके स्वागत की तैयारियां कीं। केशव राव ने एक योजना बनाई। वह इंस्पेक्टर जब कक्षा में प्रवेश करें तो सारी कक्षा स्वागत में खड़े होकर 'वन्दे मातरम' बोले। योजना के अनुसार इंस्पेक्टर जिस कक्षा में भी पहुंचता, वहीं वन्दे मातरम् कह कर उसका स्वागत किया जाता। अंग्रेज इंस्पेक्टर इससे तिलमिला गया। प्रधानाचार्य ने पूछा तो किसी बच्चे ने उनका नाम ना लिया। स्वयं केशव ने ही बताया कि यह योजना उनकी थी। परिणामत: केशव को विद्यालय से निकाल दिया गया। फिर दसवीं की परीक्षा पुणे से उत्तीर्ण की।

मेडिकल की डिग्री के लिए केशव कलकत्ता गए। कॉलेज में पढ़ते हुए ही वे अनुशीलन समिति नाम के क्रान्तिकारी संगठन के सक्रिय सदस्य बन गए। डॉक्टर बनकर लौटने पर भी उन्होंने व्यवसाय नहीं किया, अपितु समाज सेवा करते रहे।

कांग्रेस के आन्दोलन में भी भाग लिया और जेल भी गए। नागपुर के जिलास्तर के कांग्रेस के कार्यकर्ता भी रहे। 1922 में जेल से छूटकर आए तब अत्यन्त गहराई से विचार किया कि भारत परतंत्र क्यों हुआ? अंग्रेजों से पहले मुसलमानों का शासन रहा। क्या हम

शक्तिहीन थे? क्या ज्ञान की कमी थी? इस परिणाम पर पहुंचे कि हम संगठित नहीं थे। विदेशी आक्रमण हुआ तो अपनों के विरुद्ध विदेशियों को ही सहयोग दिया। ऐसे उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। तब चिन्तन किया कि हिन्दू समाज का संगठन कैसे होगा? भाषण से, पुस्तकों से, हथियार से? कितने दिन में? परिणाम हुआ, संघ से होगा परन्तु लगातार संघ की क्या व्यवस्था हो? 1925 में विजयादशमी को उन्होंने सात बच्चों को खेल खिलाना शुरू किया। नाम भी बाद में सोचा पहले काम किया। उन बालकों में अपने चरित्र से अपने व्यवहार से वे गुण उत्पन्न कर दिए जो संगठन के लिए आवश्यक थे। उनमें आपसी प्रेम बढ़ गया, राष्ट्रप्रेम की ज्योति जला दी।

उसके पश्चात् नाम रखा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ। संघ का प्रचार अखबारों में विज्ञापन देकर नहीं किया, लोभ-लालच देकर नहीं किया, त्याग और प्रेम के आधार पर किया। संघ संस्थापक ने स्वयं किसी से कुछ जमा नहीं चाहा। यही अपने कार्यकर्ताओं को सिखाया कि साथियों को प्रेम दो, सहायता दो, कभी कुछ लेने की भावना ना रखो। उन स्वयंसेवकों को प्रचारक बनाकर अलग-अलग शहरों में, गांवों में भेजा। निःस्वार्थ कार्य का परिणाम ही है कि आज संघ विश्व का सबसे बड़ा संगठन है। इसका उद्देश्य हिन्दू समाज को संगठित कर, जागृत करना, वैभव सम्पन्न बनाना है। व्यक्तिगत लाभ के लिए कुछ भी करना नहीं है जो भी करना है, अपने समाज, अपने राष्ट्र के लिए ही करना है।

संघ के लिए काम करते हुए 1940 तक डॉ. साहब की देह जर्जर हो गई। अतः 21 जून, 1940 को संचालन का भार श्रीगुरुजी (श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) को सौंप कर इस संसार से अन्तिम विदा ली। इससे पहले 20 जून को उनसे मिलने सुभाष चन्द्र बोस भी आए थे परन्तु उनकी अचेत अवस्था में कोई संवाद नहीं हो पाया।

डॉ. हेडगेवार महापुरुष थे। उनका यह संगठन अपने लिए कुछ नहीं करता है। सब प्रकार की सेवा स्वयं प्रेरणा से बिना किसी दबाव या प्रभाव से करता है। भारत माता की जय। ❐

खोलें मन की गांठें

■ **इन्दिरा मोहन**

धीरे धीरे धीरे
फसलें तम की काटें
विश्वास कलश भर लें
आस्था अमृत बांटें।
आंगन की खुशहाली
माटी का सोंधापन
कलरव करता बचपन
उल्लास भरा यौवन।
सूखे तिनके चुनकर
गुलमोहर को छांटें
आपस में बतिया लें
कुछ हंस लें कुछ गा लें
शब्दों को प्रण मिलें
रिश्तों के स्वर बदलें।
माथे रोली अक्षत
खोलें मन की गांठें
सुख-सुविधा की पोथी
बस्ती-बस्ती बांचे
भीतर चन्दन खुशबू
सच झूठ स्वयं जांचें।
सद्भाव सहज निकसे,
अवसादों को पाटें।
दो राहे चौराहे
पथिकों से सजते हैं
साम्राज्यों की रचना
जन-जन ही करते हैं
पूरब की देहरी पर
सूरज किरणें पलटें। ❐

राष्ट्रऋषि श्रीगुरुजी

■ प्रतिनिधि

राष्ट्रीय स्वयंसवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री माधव सदाशिव राव गोलवलकर 'श्रीगुरुजी' का जन्म माघ कृष्ण एकादशी (विजया एकादशी) विक्रम संवत् 1962 तथा तद्नुसार 19 फरवरी, 1906 को प्रातः के साढ़े चार बजे नागपुर में हुआ था। उनका नाम माधव रखा गया। परन्तु परिवार के सारे लोग उन्हें मधु नाम से ही सम्बोधित करते थे । बचपन में उनका यही नाम प्रचलित था। ताई-भाऊजी की कुल 9 संतानें हुई थीं। उनमें से केवल मधु ही बचा रहा और अपने माता-पिता की आशा का केन्द्र बना।

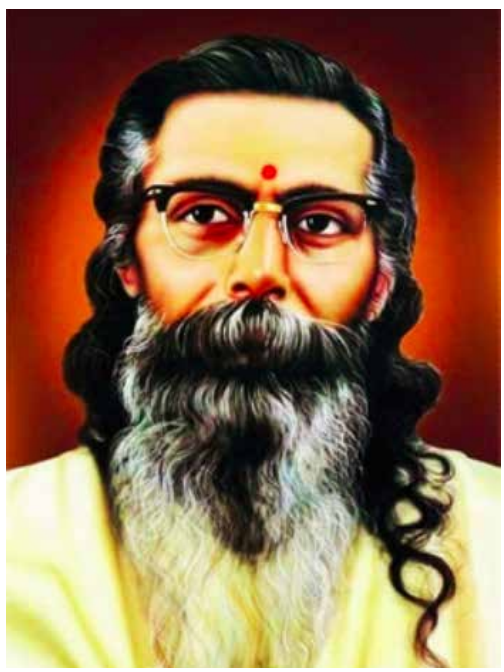

डॉक्टर जी के बाद श्रीगुरुजी संघ के द्वितीय सरसंघचालक बने और उन्होंने यह दायित्व 1973 की 5 जून तक अर्थात लगभग 33 वर्ष तक संभाला। ये 33 वर्ष संघ और राष्ट्र के जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहे। 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन, 1947 में देश का विभाजन तथा खण्डित भारत को मिली राजनीतिक स्वाधीनता, विभाजन के पूर्व और विभाजन के बाद हुआ भीषण रक्तपात, हिन्दू विस्थापितों का विशाल संख्या में हिन्दुस्तान आगमन, कश्मीर पर पाकिस्तान का आक्रमण। 1948 की 30 जनवरी को गांधी जी की हत्या, उसके बाद संघ विरोधी विष-वमन, हिंसाचार की आंधी और संघ पर प्रतिबन्ध का लगाया जाना, भारत के संविधान का निर्माण और भारत के प्रशासन का स्वरूप व नीतियों का निर्धारण, भाषावार प्रांत रचना, 1962 में भारत पर चीन का आक्रमण, पंडित नेहरू का निधन, 1965 में भारत पाक युद्ध, 1971 में भारत व पाकिस्तान के बीच दूसरा युद्ध और बांग्लादेश का जन्म, हिन्दुओं के अहिंदूकरण की गतिविधियां और राष्ट्रीय जीवन में वैचारिक मंथन आदि अनेकविध घटनाओं से व्याप्त यह कालखण्ड रहा।

इस कालखण्ड में परम पूजनीय श्रीगुरुजी ने संघ का पोषण और संवर्धन किया। भारत भर का अखंड भ्रमण कर सर्वत्र कार्य को गतिमान किया और स्थान-स्थान पर व्यक्ति-व्यक्ति को जोड़कर सम्पूर्ण भारत में संघकार्य का जाल बिछाया। विपुल पठन-अध्ययन, गहन चिंतन, आध्यात्मिक साधना व गुरुकृपा, मातृभूमि के प्रति निस्वार्थ समर्पणशीलता, समाज के प्रति असीम आत्मीयता, व्यक्तियों को जोड़ने की अनुपम कुशलता आदि गुणों के कारण उन्होंने सर्वत्र संगठन को तो मजबूत बनाया ही, साथ ही हर क्षेत्र में देश का परिपक्व वैचारिक मार्गदर्शन भी किया।

संघ के विशुद्ध और प्रेरक विचारों से राष्ट्रजीवन के अंगोपांगों को अभिभूत किये बिना सशक्त, आत्मविश्वास से परिपूर्ण और सुनिश्चित जीवन कार्य पूरा करने के लिए सक्षम भारत का खड़ा होना असंभव है, इस जिद और लगन से उन्होंने अनेक कार्यक्षेत्रों को प्रेरित किया। विश्व हिन्दू परिषद, विवेकानन्द शिला स्मारक, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, भारतीय मजदूर संघ, वनवासी कल्याण आश्रम, शिशु मंदिरों आदि विविध सेवा संस्थाओं के पीछे श्रीगुरुजी की ही प्रेरणा रही है। राजनीतिक क्षेत्र में भी डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को उन्होंने पं. दीनदयाल उपाध्याय जैसा अनमोल हीरा सौंपा। 5, जून, 1973 को इन राष्ट्रऋषि का निधन हुआ। ❐

माता-पिता अवश्य पढ़ें

बाज पक्षी जिसे हम ईगल या शाहीन भी कहते हैं, जिस उम्र में बाकी परिंदों के बच्चे चिचियाना सीखते हैं उस उम्र में एक मादा बाज अपने चूजे को पंजे में दबोच कर सबसे ऊंचा उड़ जाती है। पक्षियों की दुनिया में ऐसी किसी और की नहीं होती।

मादा बाज अपने चूजे को लेकर लगभग 12 किलोमीटर ऊपर ले जाती है। इस दूरी को तय करने में मादा बाज 7 से 9 मिनट का समय लेती है। यहां से शुरू होती है उस नन्हें चूजे की कठिन परीक्षा। उसे अब यहां बताया जाएगा कि तू किसलिए पैदा हुआ है? तेरी दुनिया क्या है? तेरी ऊंचाई क्या है? तेरा धर्म बहुत ऊंचा है और फिर मादा बाज उसे अपने पंजों से छोड़ देती है।

धरती की ओर ऊपर से नीचे आते वक्त लगभग 2 किलोमीटर उस चूजे को आभास ही नहीं होता कि उसके साथ क्या हो रहा है। 7 किलोमीटर के अंतराल के आने के बाद उस चूजे के पंख जो कंजाइन से जकड़े होते हैं, वह खुलने लगते हैं। लगभग 9 किलो मीटर आने के बाद पंख पूरे खुल जाते हैं। यह जीवन का पहला दौर होता है जब बाज का बच्चा पंख फड़फड़ाता है।

अब धरती से वह लगभग 3000 मीटर दूर है लेकिन अभी वह उड़ना नहीं सीख पाया है। अब धरती के बिल्कुल करीब आता है जहां से वह देख सकता है अपने इलाके को। अब उसकी दूरी धरती से महज 700-800 मीटर होती है लेकिन उसका पंख अभी इतना मजबूत नहीं हुआ है कि वो उड़ सके। धरती से लगभग 400-500 मीटर दूरी पर उसे अब लगता है कि उसके जीवन की शायद अंतिम यात्रा है। फिर अचानक से एक पंजा उसे आकर अपनी गिरफ्त मे लेता है और अपने पंखों के दरमियान समा लेता है। यह पंजा उसकी मां का होता है जो ठीक उसके उपर चिपक कर उड़ रही होती है। और उसकी यह ट्रेनिंग निरंतर चलती रहती है जब तक कि वह उड़ना नहीं सीख जाता। यह ट्रेनिंग एक कमांडो की तरह होती है, तब जाकर दुनिया को एक बाज़ मिलता है अपने से दस गुना अधिक वजनी प्राणी का भी शिकार करता है।

हिंदी में एक कहावत है- "बाज़ के बच्चे मुँडेरों पर नही उड़ते..." बेशक अपने बच्चों को अपने से चिपका कर रखिए पर उसे दुनिया की मुश्किलों से रूबरू कराइए, उन्हें लड़ना सिखाइए। बिना आवश्यकता के भी संघर्ष करना सिखाइए। वर्तमान समय की अनन्त सुख सुविधाओं की आदत व अभिवावकों के बेहिसाब लाड़ प्यार ने मिलकर, आपके बच्चों को "ब्रायलर मुर्गे" जैसा बना दिया है जिसके पास मजबूत टंगड़ी तो है पर चल नहीं सकता। वजनदार पंख तो है पर उड़ नहीं सकता क्योंकि...

बेटी की विदाई

■ **सतीश नापित**

कन्यादान हुआ सब पूरा, आया समय विदाई का।
हंसी खुशी सब काम हुआ था, सारी रस्म अदाई का।।

बेटी के उस कातर स्वर ने, बाबुल को झकझोर दिया।
पूछ रही थी पापा तुमने, क्या सचमुच में छोड़ दिया।।

अपने आँगन की फुलवारी, मुझको सदा कहा तुमने।
मेरे रोने को पलभर भी, बिल्कुल नहीं सहा तुमने।।

क्या इस आँगन के कोने में, मेरा कुछ स्थान नहीं।
अब मेरे रोने का पापा, तुमको बिल्कुल ध्यान नहीं।।

नही रोकते चाचा ताऊ, भैया से भी आस नहीं।
ऐसी भी क्या उदासी है, कोई आता पास नहीं।।

बेटी की बातों को सुन के, पिता नहीं रह सका खड़ा।
उमड़ पड़े आँखों से आँसू, बदहवास सा दौड़ पड़ा।।

माँ को लगा गोद से कोई, मानो सब कुछ छीन चला।
फूल सभी घर की फुलवारी से, कोई ज्यों बीन चला।।

बेटी के जाने पर घर ने, जाने कया-क्या खोया है।
कभी न रोने वाला पिता भी आज, फूट-फुटकर रोया है।। ❐

सामाजिक समरसता के सिपाही : संत तुकाराम

■ स्वाति पाठक 'स्वाति'

संत तुकाराम का जन्म पुणे जिले के अंतर्गत देहू नामक ग्राम में सन् 1598 में हुआ था। पूर्व के आठवें पुरुष विश्वंभर बाबा से इनके कुल में विट्ठल की उपासना बराबर चली आ रही थी। तुकाराम महाराज महाराष्ट्र के भक्ति अभियान के कवि-संत थे। वे समनाधिकारवादी, धार्मिक समुदाय के सदस्य भी थे। इनके कुल के सभी लोग पंढरपुर की यात्रा के लिये नियमित रूप से जाते थे। देहू गाँव के महाजन होने के कारण वहाँ इनका कुटुंब प्रतिष्ठित माना जाता था। इनका बचपन माता कनकाई व पिता बहेबा (बोल्होबा) की देखरेख में अत्यंत दुलार से बीता किंतु जब ये प्राय: 18 वर्ष के थे इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया तथा इसी समय देश में भीषण अकाल पड़ने के कारण इनकी प्रथम पत्नी व छोटे बालक की भूख के कारण तड़पते हुए मृत्यु हो गई।

संत तुकाराम उस जमाने में बहुत बड़े जमीदार और साहूकार थे। तुकाराम का मन प्रपंच से ऊब गया। इनकी दूसरी पत्नी जीजाबाई बड़ी ही कर्कशा थीं। ये सांसारिक सुखों से विरक्त हो गए। चित्त को शांति मिले, इस विचार से तुकाराम प्रतिदिन देहू गाँव के समीप भावनाथ नामक पहाड़ी पर जाते और भगवान विट्ठल के नाम-स्मरण में दिन व्यतीत करते।

परमेश्वर प्राप्ति के लिये उत्कंठित तुकाराम को बाबा जी चैतन्य नामक साधु ने माघ शुक्ल 10 शके 1541 में रामकृष्ण हरि मंत्र का स्वप्न में उपदेश दिया। इसके उपरांत इन्होंने 17 वर्ष संसार को समान रूप से उपदेश देने में व्यतीत किए। सच्चे वैराग्य तथा क्षमाशील अंत:करण के कारण इनकी निंदा करने वाले निंदक भी पश्चाताप करते हुए इनके भक्त बन गए। इस प्रकार भगवत धर्म का सबको उपदेश करते व परमार्थ मार्ग को आलोकित करते हुए अधर्म का खंडन करने वाले तुकाराम ने फाल्गुन बदी (कृष्ण) द्वादशी, शके 1571 को देह-विसर्जन किया।

तुकाराम अपने अभंग और भक्ति कविताओं के लिए जाने जाते हैं और अपने समुदाय में भगवान की भक्ति को लेकर उन्होंने बहुत से आध्यात्मिक गीत भी गाये है जिन्हें स्थानिक भाषा में कीर्तन कहा जाता है। उनकी कविताएं विट्ठल और विठोबा को समर्पित होती थीं, जो भगवान विष्णु का ही अवतार माने जाते हैं। तुकाराम के मुख से समय समय पर सहज रूप से परिस्फुटित होने वाली अभंग वाणी के अतिरिक्त इनकी अन्य कोई विशेष साहित्यिक कृति नहीं है। अपने जीवन के उत्तरार्ध में इनके द्वारा गाए गए तथा उसी क्षण इनके शिष्यों द्वारा लिखे गए लगभग 4000 अभंग आज उपलब्ध हैं।

संत ज्ञानेश्वर द्वारा लिखी गई ज्ञानेश्वरी तथा श्री एकनाथ द्वारा लिखित एकनाथी भागवत के संप्रदाय वालों के प्रमुख धर्मग्रंथ हैं। इस वांड्मय की छाप तुकाराम के अभंगों में दिखाई पड़ती है। तुकाराम ने अपनी साधक अवस्था में इन पूर्वकालीन संतों के ग्रंथों का गहराई तथा श्रद्धा से अध्ययन किया। इन तीनों संत कवियों के साहित्य में एक ही अध्यात्म सूत्र पिरोया हुआ है तथा तीनों के पारमार्थिक विचारों का अंतरंग भी एकरूप है। ज्ञानदेव की सुमधुर वाणी काव्यालंकार से मंडित है, एकनाथ की भाषा विस्तृत और रस-प्लावित

है पर तुकाराम की वाणी सूत्रबद्ध, अल्पाक्षर, रमणीय तथा मर्मभेदक हैं।

तुकाराम का अभंग वाङ्मय अत्यंत आत्मपरक होने के कारण उसमें उनके पारमार्थिक जीवन का संपूर्ण दर्शन होता है। कौटुंबिक आपत्तियों से त्रस्त एक सामान्य व्यक्ति किस प्रकार आत्मसाक्षात्कारी संत बन सका, इसका स्पष्ट रूप उनके अभंगों में दिखलाई पड़ता है। उनमें उनके आध्यात्मिक चरित्र की साकार रूप में तीन अवस्थाएँ दिखलाई पड़ती हैं।

प्रथम साधक अवस्था में तुकाराम मन में किए किसी निश्चयानुसार संसार से निवृत तथा परमार्थ की ओर प्रवृत्त दिखलाई पड़ते हैं।दूसरी अवस्था में ईश्वर साक्षात्कार के प्रयत्न को असफल होते देखकर तुकाराम अत्यधिक निराशा की स्थिति में जीवनयापन करने लगे। उनके द्वारा अनुभूत इस नैराश्य का जो सविस्तार चित्रण अंभंग वाणी में हुआ हैं उसकी हृदयवेधकता मराठी भाषा में सर्वथा अद्वितीय है।

किंकर्तव्यमूढ़ता के अंधकार में तुकाराम जी की आत्मा को तड़पाने वाली घोर पीड़ा का शीघ्र ही अंत हुआ और आत्म साक्षात्कार के सूर्य से आलोकित तुकाराम ब्रह्मानंद में आत्म विभोर हो गए। उनके आध्यात्मिक जीवनपथ की यह अंतिम एवं चिरवांछित सफलता की अवस्था थी। इस प्रकार ईश्वर प्राप्ति की साधना पूर्ण होने के उपरांत तुकाराम के मुख से जो उपदेश वाणी प्रकट हुई वह अत्यंत महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण है। स्वभाव से स्पष्टवादी होने के कारण इनकी वाणी में जो कठोरता दिखाई पड़ती है, उसके पीछे इनका प्रमुख उद्देश्य समाज से दुष्टों का निर्दलन कर धर्म का संरक्षण करना ही था। इन्होंने सदैव सत्य का ही अवलंबन किया और किसी की प्रसन्नता और अप्रसन्नता की ओर ध्यान न देते हुए धर्मसंरक्षण के साथ-साथ पाखंड-खंडन का कार्य निरंतर चलाया। दंभी संत, अनुभवशून्य पोथीपंडित, दुराचारी धर्मगुरु इत्यादि समाजकंटकों की उन्होंने अत्यंत तीव्र आलोचना की है। तुकाराम मन से भाग्यवादी थे अतः उनके द्वारा उपदेशित मानवी संसार का रूप निराशा, विफलता और उद्वेग से भरा हुआ है, तथापि उन्होंने सांसारिकों के लिये संसार का त्याग करो इस प्रकार का उपदेश कभी नहीं दिया। इनके उपदेश का यही सार है कि संसार के क्षणिक सुख की अपेक्षा परमार्थ के शाश्वत सुख की प्राप्ति के लिये मानव का प्रयत्न होना चाहिए।

तुकाराम की अधिकांश काव्य रचना केवल अभंग छंद में ही है, तथापि उन्होंने रूपकात्मक रचनाएँ भी की हैं। सभी रूपक काव्य की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं। इनकी वाणी श्रोताओं के कान पर पड़ते ही उनके हृदय को पकड़ लेने का अद्भुत सामर्थ्य रखती है। इनके काव्यों में अलंकारों का या शब्दचमत्कार का प्राचुर्य नहीं है। इनके अभंग सूत्रबद्ध होते हैं। थोड़े शब्दों में महान अर्थों को व्यक्त करने का इनका कौशल मराठी साहित्य में अद्वितीय है।

तुकाराम की आत्मनिष्ठ अभंगवाणी जनसाधारण को भी परम प्रिय लगती है। इसका प्रमुख कारण है कि सामान्य मानव के हृदय में उद्भूत होने वाले सुख, दुख, आशा, निराशा, राग, लोभ आदि का प्रकटीकरण इसमें दिखाई पड़ता है। तुकाराम के वाङ्मंय ने जन के हृदय में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है। ज्ञानेश्वर, नामदेव आदि संतों ने भागवत धर्म की पताका को अपने कंधों पर ही लिया था किंतु तुकाराम ने उसे अपने जीवनकाल ही में अधिक ऊँचे स्थान पर फहरा दिया। उन्होंने अध्यात्मज्ञान को सुलभ बनाया तथा भक्ति का डंका बजाते हुए आबाल-वृद्धों के लिये सहज सुलभ साध्य ऐसे भक्ति मार्ग को अधिक उज्ज्वल कर दिया।

संत तुकाराम ने इस बात पर बल दिया है कि सभी मनुष्य परमपिता ईश्वर की संतान हैं और इस कारण समान हैं। संत तुकाराम द्वारा महाराष्ट्र धर्म का प्रचार हुआ जिसके सिद्धांत भक्ति आंदोलन से प्रभावित थे। महाराष्ट्र धर्म का तत्कालीन सामाजिक विचारधारा पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यद्यपि इसे जाति और वर्णव्यवस्था पर कुठाराघात करने में सफलता प्राप्त नहीं हुई, किंतु इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि समानता के सिद्धांत के प्रतिपादन द्वारा इसके प्रणेता वर्णव्यवस्था को लचीला बनाने में अवश्य सफल हुए। महाराष्ट्र धर्म का उपयोग शिवाजी ने उच्चवर्गीय मराठों तथा निम्न वर्ग को एकसूत्र में बाँधने के लिए किया। ❐

रंगों का त्योहार : होली

■ पंडित रामप्रसाद

वसन्त पंचमी के आते ही प्रकृति में एक नवीन परिवर्तन आने लगता है। दिन छोटे होते हैं। जाड़ा कम होने लगता है। उधर पतझड़ शुरू हो जाता है। माघ की पूर्णिमा पर होली का डांडा रोप दिया जाता है। आम्र मञ्जरियों पर भ्रमरावलियाँ मँडराने लगती हैं। वृक्षों में कहीं-कहीं नवीन पत्तों के दर्शन होने लगते हैं। प्रकृति में एक नयी मादकता का अनुभव होने लगता है। इस प्रकार होली पर्व के आते ही एक नवीन रौनक, नवीन उत्साह एवं उमंग की लहर दिखायी देने लगती है।

होली जहाँ एक ओर एक सामाजिक एवं धार्मिक त्योहार है, वहीं यह रंगों का त्योहार भी है। आबालवृद्ध, नर-नारी-सभी इसे बड़े उत्साह से मनाते हैं। यह एक देशव्यापी त्योहार भी है। इसमें वर्ण अथवा जातिभेद को कोई स्थान नहीं है। इस अवसर पर लकड़ियों तथा कंडों आदि का ढेर लगाकर होलिका पूजन किया जाता है, फिर उसमें आग लगायी जाती है। पूजन के समय निम्न मन्त्र का उच्चारण किया जाता है–

असृक्पाभयसंत्रस्तैः कृता त्वं होलि बालिशैः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव॥

इस पर्व को नवान्नेष्टि यज्ञ पर्व भी कहा जाता है। खेत से नवीन अन्न को यज्ञ में हवन करके प्रसाद लेने की परम्परा है। उस अन्न को होला कहते हैं। इसी से इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा।

होलिकोत्सव मनाने के सम्बन्ध में अनेक मत प्रचलित हैं। यहाँ कुछ प्रमुख मतों का उल्लेख किया गया है–

(1) ऐसी मान्यता है कि इस पर्व का सम्बन्ध 'काम-दहन' से है। भगवान् शंकर ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया था। तभी से इस त्योहार का प्रचलन हुआ।

(2) फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा पर्यन्त आठ दिन होलाष्टक मनाया जाता है। भारत के कई प्रदेशों में होलाष्टक शुरू होने पर एक पेड़ की शाखा काटकर उसमें रंग-बिरंगे कपड़ों के टुकड़े बाँधते हैं। इस शाखा को जमीन में गाड़ दिया जाता है। सभी लोग इसके नीचे होलिकोत्सव मनाते हैं।

(3) यह त्योहार हिरण्यकशिपु की बहन की स्मृति में भी मनाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि हिरण्यकशिपु की बहन होलिका वरदान के प्रभाव से नित्यप्रति अग्नि-स्नान करती और जलती नहीं थी। हिरण्यकशिपु ने अपनी बहन से प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि-स्नान करने को कहा। उसने समझा था कि ऐसा करने से प्रह्लाद जल जायगा तथा होलिका बच निकलेगी।

हिरण्यकशिपु की बहन ने ऐसा ही किया, होलिका तो जल गयी, किंतु प्रह्लाद जीवित बच गये। तभी से इस त्योहार के मनाने की प्रथा चल पड़ी।

(4) इस दिन आम्रमञ्जरी तथा चन्दन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है। कहते हैं जो लोग फाल्गुन पूर्णिमा के दिन एकाग्र चित्त से हिंडोले में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरुषोत्तम के दर्शन करते हैं, वे निश्चय ही वैकुण्ठ लोक में वास करते हैं।

(5) भविष्य पुराण में कहा गया है कि एक बार नारद जी ने महाराज युधिष्ठिर से कहा–राजन्! फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन सब लोगों को अभयदान देना चाहिये, जिससे सम्पूर्ण प्रजा उल्लासपूर्वक हँसे। बालक गाँव के बाहर से लकड़ी-कंडे लाकर ढेर लगायें। होलिका का पूर्ण सामग्री सहित विधिवत् पूजन करें। होलिका-दहन करें। ऐसा करने से सारे अनिष्ट दूर हो जाते हैं।

होली एक आनन्दोल्लास का पर्व है। इसमें जहाँ एक ओर उत्साह-उमंग की लहरें हैं, तो वहीं दूसरी ओर कुछ बुराइयाँ भी आ गयी हैं। कुछ लोग इस अवसर पर अबीर, गुलाल के स्थान पर कीचड़, गोबर, मिट्टी आदि भी फेंकते हैं। ऐसा करने से मित्रता के स्थान पर शत्रुता का जन्म होता है। अश्लील एवं गंदे हँसी-मजाक एक-दूसरे के हृदय को चोट पहुँचाते हैं। अतः इन सबका त्याग करना चाहिये।

होली सम्मिलन, मित्रता एवं एकता का पर्व है। इस दिन द्वेषभाव भूलकर सबसे प्रेम और भाई चारे से मिलना चाहिये। एकता, सद्भावना एवं सोल्लास का परिचय देना चाहिये। यही इस पर्व का मूल उद्देश्य एवं संदेश है। ❐

औरों के हित जो जीता है

■ प्रतिनिधि

भारत के मध्य क्षेत्र में एक राज्य हुआ करता था। उस राज्य के मध्य से गुजर रही नदी के किनारे बनी अपनी कुटिया में एक संत वर्षों से रह रहे थे। ब्राह्ममुहूर्त में उठकर वे नदी में स्नान करते और फिर घंटों बैठकर परमात्मा के ध्यान में डूबे रहते।

ध्यान के पश्चात वे नित्य अग्निहोत्र करते, शास्त्रों का स्वाध्याय करते, फिर वे पास के वन क्षेत्र में जाकर भ्रमण करते और प्रकृति के अद्‌भुत सौंदर्य में परमात्मा के सौंदर्य की अनुभूति करते। प्रकृति से उन्हें बेहद लगाव था इसलिए वे अधिकांश समय प्रकृति की गोद में ही बैठे रहते। उनकी प्रसिद्धि समय के साथ-साथ बढ़ती चली गई। अमीर-गरीब, बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी उनसे मिलकर बहुत ही प्रसन्नता का अनुभव करते थे। कई गृहस्थ उनसे अपनी पारिवारिक समस्याओं का समाधान पाते और फिर अपने कर्त्तव्यपालन में लग जाते थे। उस राज्य के राजा को भी उन संत से मिलने की इच्छा हुई। राजा के मन में राजकाज के अलावा कई ऐसे सवाल थे, जिनका उत्तर वे उन संत से पाना चाहते थे। आखिर एक दिन राजा उन संत की कुटिया में पधारे।

उस समय वे संत अपनी कुटिया में बैठे शास्त्रों का अध्ययन कर रहे थे। राजा ने उन्हें प्रणाम कर आसन ग्रहण किया। संत ने उनका कुशलक्षेम पूछा और आने का कारण भी जानना चाहा। राजा ने प्रत्युत्तर में प्रश्न किया- ''महाराज! मैं धर्मनिष्ठ जीवन जीता हूँ। शास्त्रोक्त नियमों का पालन करता हूँ। तब भी न जाने क्यों मेरे राज्य में बेईमानी बढ़ती जा रही है। जहाँ-तहाँ छल-कपट और धोखेबाजी के दर्शन होते हैं। महाराज ! क्या राज्य में ऐसा भी कोई आदमी है, जो सदाचारी है और गुणों में देवता से भी महान है?''

संत ने उत्तर में कहा- ''है क्यों नहीं? एक तो आप स्वयं हैं; क्योंकि आप समस्या के समाधान की जिज्ञासा रखते हैं और सत्य को जानने की जिज्ञासा वाले व्यक्ति को मैं महान समझता हूँ।''

राजा बोले- ''आपकी दृष्टि में मैं भले ही महान होऊँ, मगर मैं ऐसे अन्य महान आदमी को देखना चाहता हूँ जो मुझसे भी महान हो।'' संत ने कहा- "तब तो वह व्यक्ति मैं हूँ।'' राजा ने फिर कहा- "मैं आपसे भी महान आदमी को देखना चाहता हूँ। कृपया मुझे उसके पास ले चलिए।''

संत ने एक क्षण राजा की ओर देखकर कहा- "राजन् हमें उठकर कहीं जाने की जरूरत नहीं। हमसे महान सैकड़ों आदमी हमें अपने आस-पास ही देखने को मिल जाएँगे, केवल हमें उनकी ओर उस दृष्टि से देखना होगा। आप तो अभी जरा उस सौ साल की वृद्धा की ओर ही देख लीजिए, वह क्या कर रही है?'' राजा ने कहा- "वह तो कुछ देर पूर्व पौधे लगा रही थी, पौधों में पानी दे रही थी और अब वही एक कुदाल से कुआँ खोद रही है।''

"मगर उसे इस उम्र में पेड़ लगाने, उन्हें सींचने और फिर कुआँ खोदने की क्या जरूरत है। जब तक वह पौधा वृक्ष बनेगा, फल देगा, तब तक वह स्वयं ही जीवित नहीं रहेगी। न तो वह उन वृक्षों के फल ही खा पाएगी, न ही उस कुएँ का पानी पी पाएगी।'' - राजा ने यह संत से पूछा।

संतप्रवर बोले- ''राजन् आपने ठीक कहा, शरीर छोड़ने की इस उम्र में उसे यह सब करने की क्या जरूरत है? पर राजन्! जरूरत ही सब कुछ नहीं हुआ करती। जो दूसरों के लिए निर्लिप्त होकर अपना जीवन बलिदान करते हैं, वे ही वास्तव में महान हैं और ईश्वरस्वरूप हैं। औरों के लिए जीने और मरने वाले लोग जीवन और मरण की समस्त सीमाएँ लाँघकर अमर हो जाते हैं।'' युगऋषि परमपूज्य गुरुदेव ने भी कितना सुंदर कहा है-औरों के हित जो जीता है, औरों के हित जो मरता है- उसका हर आँसू रामायण, प्रत्येक कर्म ही गीता है। इस प्रकरण से राजा को सचमुच एक नई जीवन-दृष्टि मिली। वे संतप्रवर का धन्यवाद करते हुए वहाँ से चल पड़े और उसी दिन से अपनी प्रजा के सुख, समृद्धि के लिए जी-जान से जुट गए। ❐

साभार : अखण्ड ज्योति

कानून में महिला अधिकार

■ वीना शर्मा

भारतीय कानून महिला-पुरुष दोनों के लिए समान हैं, परन्तु मुख्यत: शिक्षा की कमी, कानूनी जानकारी का अभाव एवं संस्कारगत सामाजिक बंधनों के कारण महिलाएं इन कानूनों का लाभ नहीं उठा पाती हैं। जो महिलाएं इन कठिनाइयों का सामना करके न्याय के लिए कानून के दरवाजे तक पहुंचती भी हैं, तो उनके लिए कानूनी-प्रक्रिया इतनी लंबी, खींचने वाली और महंगी होती है कि वे कानून की भूल-भुलैया में ही गुम होकर रह जाती हैं।

देखा जाए तो भारतीय कानून-प्रक्रिया महिलाओं के पक्ष में दिखाई देती है। परन्तु इसका व्यावहारिक पक्ष इतना क्रूर व कठोर है कि उसको न्याय के नाम पर आश्वासन और समय की लंबी थकान के अलावा कुछ नहीं मिलता है।

सन् 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ था, तो भारत के सभी नागरिकों को सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक न्याय दिलाने की बात कही गई थी। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये हमारे संविधान में ऐसे कई प्रावधान हैं जिनमें महिलाओं की सुरक्षा व उनकी स्थिति में सुधार का ध्यान रखा गया है।

संविधान के 14वें अनुच्छेद में बताया गया है कि भारत के राज्य-क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को कानून के सामने समता या कानूनों के समान संरक्षण से वंचित नहीं किया जायेगा।

राज्य धर्म, मूलवश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर किसी भी नागरिक के बिरुद्ध असमानता का व्यवहार नहीं करेगा।

राज्य के अधीन नौकरियों और पदों पर नियुक्ति के मामले में महिला होने के कारण किसी को नहीं नकारा जाएगा।

शोषण रोकने के अधिकार

संविधान के अनुच्छेद 39 (स) के तहत राज्यों को महिलाओं के शोषण रोकने के लिए कई अधिकार दिये गये हैं।

जैसे-राज्य को पुरुष व महिला मजदूरों के स्वास्थ्य व शक्ति की सुरक्षा करनी चाहिए तथा बच्चों का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए।

संविधान के अनुच्छेद 51-अ (ई) के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक का परम कर्त्तव्य है कि वह उन प्रथाओं का परित्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हो।

फैसले के विरुद्ध अपील

यदि किसी महिला को लगता है कि कोई फैसला उसके विरुद्ध हुआ है, तो महिलाओं का संगठन न्यायालय की अनुमति से न्यायालय में अपील कर सकता है।

रोजगार और महिलाएं

सार्वजनिक रोजगारों में महिलाओं के लिये सामानता बनाने के लिए राज्य को अधिकार है। साथ ही साथ सार्वजनिक पदों व रोजगार में भी भेदभाव बरतने से मना किया गया है। यह समानता सार्वजनिक क्षेत्र के नियमों पर भी लागू होती है।

उदाहरण के लिए सार्वजनिक क्षेत्र का निगम 'एयर इंडिया' ने विमान परिचारिकाओं (एयर होस्टेस) और पुरुष कारिन्दों के लिए सेवा की कुछ शर्तें निर्धारित कर रखी हैं। इसके अनुसार महिला विमान परिचारिका की सेवा 35 वर्ष की आयु तक सीमित रखी गई है।

परन्तु यदि अपनी नियुक्ति के चार वर्ष के भीतर वह शादी कर लेती है, तो उसकी सेवा समाप्त घोषित की जाएगी या उसकी पहली गर्भावस्था में सेवा समाप्त

हो जाएगी।

लेकिन सर्वोच्च न्यायालय ने पहली गर्भावस्था पर सेवा समाप्ति की शर्त को अनुचित घोषित करते हुए यह निर्णय दिया कि यह शर्त अविवेकपूर्ण, स्वेच्छाचारी और महिलाओं के प्रति भेदभाव रखती है।

जातीय कानून

व्यक्तिगत (जातीय) कानूनों में भी समानता का अधिकार लागू होता है। जैसे भारतीय तलाक अधिनियम, जो ईसाइयों पर लागू होता है, को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है।

1. मुस्लिम व्यक्तिगत कानूनों के कुछ वैसे नियम, जो महिलाओं के प्रति शोषण और भेदभाव बरतते हैं, को भी चुनौती दी गई है।

2. हिंदू अवयस्क अधिनियम 1956 की धारा 6 (1) 'अ' और धारा 19 (1) 'ब' के अनुसार किसी अवयस्क का अभिभावक उसका पिता होगा और पिता के बाद उसकी मां होगी। इस प्रावधान को भी सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी गई है, क्योंकि इससे समानता की भावना खंडित होती है।

दाम्पत्य अधिकार

हिन्दू विवाह अधिनियम के तहत पति-पत्नी को कई अधिकार मिले हैं। इनके अधिकारों में कई तरह के मतभेद भी हैं। जैसे यदि कोई नौकरी पेशा पत्नी यह दावा करती है कि उसे मकान चुनने की आजादी दी जाए, तो इसके लिए उसे अधिकार मिले हैं। उदाहरण के लिए पति एक स्थान पर नौकरी करता है और पत्नी दूसरे स्थान पर नौकरी करती है। पत्नी ने शादी के बाद भी अपनी नौकरी नहीं छोड़ी। पति ने हिन्दू विवाह अधिनियम के तहत याचिका दायर की कि पत्नी को आकर उसके साथ मिलना व साथ-साथ रहना चाहिए।

याचिका वैवाहिक अधिकारों की पुनर्स्थापना के तहत थी। परन्तु पत्नी ने अपनी नौकरी के कारण पति के साथ रहने से मना कर दिया।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने पति की याचिका को खारिज कर दिया और यह निर्णय दिया कि हिन्दू कानून में ऐसा कोई आदेश नहीं है, जिससे यह पता चले कि एक हिन्दू पत्नी को अपना वैवाहिक घर चुनने की स्वतन्त्रता का कोई अधिकार नहीं है।

समान वेतन

महिलाओं और पुरुषों को समान वेतन देने के लिए ने सन् 1976 में समान वेतन अधिनियम बनाया। इस अधिनियम की धारा-4 यह बताती है कि कोई भी नियोजक किसी विपरीत लिंग (महिला) के किसी मजदूर, जो समान कार्य या उसकी प्रकृति का काम करती है, को कम भुगतान नहीं कर सकता है।

महिला का पक्ष लेने वाले कानून

1. ऐसे कई कानून हैं, जो महिलाओं का पक्ष लेते हैं, जैसे- (क) विशेष विवाह अधिनियम की धारा 36 गुजारे-भत्ते का आदेश केवल पत्नी के पक्ष में देती है तथा इसकी वैधता को स्वीकार किया गया है।

(ख) महिला अगर पर-पुरुष के साथ शारीरिक संबंध रखती है, तो उसे सजा देने से मुक्त रखा गया है। इस तरह की रियायत की वैधता को भी स्वीकार कर लिया गया है।

(ग) महिलाओं को आपराधिक प्रक्रिया संहिता के अनुसार जमानत पर रिहा होने का विशेष अधिकार दिया गया है। इन्हें भी वैध करार दिया गया है।

(घ) दीवानी प्रक्रिया संहिता के अन्तर्गत किसी परिवार की महिला सदस्य के नाम से सम्मन जारी नहीं किया जा सकता है। इसे न्यायालय ने वैध घोषित किया है।

(ङ) भारतीय दण्ड संहिता की धारा 354 के अन्तर्गत केवल महिलाओं के प्रति अश्लील और अभद्र बर्ताव करने के प्रावधान को भी विवेक-पूर्ण श्रेणीकरण के आधार पर उचित पाया गया है।

भ्रूण हत्या कब और क्यों?

गर्भपात, जन्म को छिपाना एवं शिशुओं को आरक्षित छोड़ना आदि।

विधिपूर्ण विवाह से गर्भधारण करना एवं बच्चे को जन्म देना हर माता का एक अधिकार है। लेकिन यह अधिकार उस समय उसके लिये अभिशाप बन जाता है, जब वह बच्चे का अन्य किसी पुरुष से अवैध सम्बन्ध स्थापित कर गर्भ धारण करती है। ऐसी अवस्था में वह

या तो गर्भपात कराने का प्रयास करती है या फिर ऐसे उत्पन्न बच्चे को छिपा देने या उसे मार डालने को उद्यत रहती है। ऐसे कृत्यों को विधि में दंडनीय बनाया गया है। संहिता में इन्हें शिशुओं के जन्म से सम्बंधित अपराध के नाम से सम्बोधित किया गया है।

1. गर्भपात करवाना 2. अजन्मे बच्चे को क्षति पहुंचाना 3. बच्चों को अरक्षित छोड़ देना 4. बच्चे के जन्म को छिपाना।

भारतीय दण्ड संहिता की धारा 312 के अनुसार जो कोई गर्भवती स्त्री का स्वेच्छया गर्भपात कराएगा यदि ऐसा गर्भपात उस स्त्री का जीवन बचाने के प्रयोजन से सद्भाव-पूर्वक न किया जाये, तो वह दोनों में से किसी भांति के कारावास से, जिसकी अवधि तीन वर्ष तक की हो सकेगी, या जुर्माने से या दोनों से, दण्डित किया जायेगा और यदि वह स्त्री स्पन्ध गर्भा हो, तो वह दोनों में से किसी भांति के कारावास, जिसकी अवधि सात वर्ष तक की हो सकेगी, दण्डित किया जायेगा और जुर्माने से दण्डनीय होगा।

स्पष्टीकरण- जो स्त्री स्वयं अपना गर्भपात करती है वह इस धारा के अन्तर्गत आती है।

गर्भपात से अभिप्राय- गर्भाधान की अवधि पूर्ण होने के पूर्व ही किसी भी समय अविकसित बच्चे को अथवा माता के गर्भ से भ्रूण (थ्वमजने) के बाहर निकाल देने से है।

'स्पन्ध' (Quickening) से अभिप्राय- स्त्री की उस अनुभूति से है जो उसे गर्भावस्था के चौथे पांचवें महीने में प्रतीत होती है।

धारा 313 स्त्री की सहमति के बिना गर्भपात जो कोई किसी स्त्री की सहमति के बिना गर्भपात करेगा, वह आजीवन कारावास से, या दोनो में से किसी भांति के कारावास से, जिसकी अवधि दस वर्ष तक की हो सकेगी, दण्डित किया जायेगा, और जुर्माने से भी दण्डनीय होगा।

इस धारा के अन्तर्गत केवल उस व्यक्ति को दण्डित किया जता है जो किसी स्त्री का गर्भपात करता है जबकि धारा 312 के अन्तर्गत उसके साथ-साथ स्त्री को भी दण्डित किया जाता है।

वर्तमान समय में लड़कियां हर क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी वे छात्रों से अच्छे अंक लड़कियां ला रही हैं।

महिलाओं के विकास के बिना देश के विकास की कल्पना अधूरी है। महिला जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे है। वह शक्ति पुंज बने और यह कार्य करने के लिए स्वयं आगे आये।

महिला अगर चाहे तो समाज की बेहतर स्थापना के लिए अपना योगदान दे सकती है। वह मां के रूप में, पत्नी के रूप में बेटी के रूप में, बहन के रूप में अपनी सार्थकता सिद्ध करे और बच्चों के मनोविज्ञान को समझे। ❐

मन की आवाज

बहुत साल बाद दो दोस्त रास्ते में मिले। धनवान दोस्त ने अपनी आलिशान गाड़ी पार्क की और गरीब मित्र से बोला चल इस गार्डन में बैठकर बात करते हैं। चलते-चलते अमीर दोस्त ने गरीब दोस्त से कहा तेरे में और मेरे में बहुत फर्क है। हम दोनों साथ में पढ़े, साथ में बड़े हुए, मैं कहां पहुंच गया और तू कहा रह गया? चलते-चलते गरीब दोस्त अचानक रुक गया। अमीर दोस्त ने पूछा क्या हुआ? गरीब दोस्त ने कहा तुझे कुछ आवाज सुनाई दी? अमीर दोस्त पीछे मुड़ा और पांच का सिक्का उठाकर बोला ये तो मेरी जेब से गिरा पांच के सिक्के की आवाज थी। गरीब दोस्त एक कांटे के छोटे से पौधे की तरफ गया, जिसमें एक तितली पंख फड़फड़ा रही थी। गरीब दोस्त ने उस तितली को धीरे से बाहर निकाला और आकाश में आजाद कर दिया। अमीर दोस्त ने आतुरता से पूछा तुझे तितली की आवाज कैसे सुनाई दी? गरीब दोस्त ने नम्रता से कहा, ''तेरे में और मुझ में यही फर्क है। तुझे 'धन' की सुनाई दी और मुझे 'मन' की आवाज सुनाई दी। ❐

- शुकदेव

सेवाधाम में मनाई बरसी

यमुनापार विभाग के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रघुराज सिंह जी ने शनिवार 4 फरवरी को अपनी धर्मपत्नी स्वर्गीय मनोरमा देवी जी की बरसी के उपलक्ष्य में दोपहर के भोजन का आयोजन किया। गत वर्ष उन्होंने सुदामा कुटी वृंदावन में साधुओं के भोजन प्रसाद का आयोजन किया था। मनोरमा देवी जी एक भक्तिमति महिला थीं। उनकी अंतिम इच्छा का पालन करते हुए रघुराज जी के परिवार ने ऐसे आयोजन किए हैं। सेवाधाम के इस भोज में 300 से अधिक छात्र, उनके शिक्षक एवं कर्मचारियों के अतिरिक्त उस विभाग के संघ अधिकारी और सेवा भारती के कार्यकर्ताओं को भी आमंत्रित किया गया था। घर परिवार के सदस्यों को तथा मित्रों को मिलाकर संख्या 400 के पार हो गई थी।

सभागार में सभी के पंक्तियों में बैठ जाने के बाद प्रधानाचार्य जी ने रघुराज सिंह जी का इस पुण्य कार्य के लिए धन्यवाद दिया तथा सराहना की। साथ ही सेवा भारती के वयोवृद्ध पुराने कार्यकर्ता आचार्य मायाराम पतंग की भी सराहना करते हुए छात्रों से परिचय कराया।

नित्य भोजन से पूर्व भोजन मंत्र किया गया तथा गणेश मंत्र विष्णु मंत्र सरस्वती मंत्र शिव स्तोत्र आदि का पाठ भी किया गया। भोजन की थाली में सब्जी, पूरी, छोले, चावल और रायते के साथ लड्डू भी परोसे गए।

सेवाधाम में इस प्रकार के आयोजन प्रायः होते रहते हैं। संघ और सेवा भारती से जुड़े हुए कार्यकर्ता अपने जन्मदिन या अन्य खुशी के अवसर सेवाधाम में मनाते रहते हैं। अभी के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रणवीर जी गुप्ता दानदाता के नाते लगभग 70 जनों को जुड़ चुके हैं। कुछ दिन पहले ही उन्होंने एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी श्री बीएल गॉड को सेवाधाम दिखाया और उनके परिवार के द्वारा नियमित दान स्वीकार करने की व्यवस्था की। सेवा धाम में आप भी जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ या किसी भी प्रसन्नता के अवसर को मिलकर भोज का आयोजन करवा सकते हैं। ऐसे ही आयोजन पर बाहर टेंट या हॉल में व्यवस्था करने पर जितना व्यय होता है, यहां उससे काफी कम में बढ़िया व्यवस्था हो जाती है। परिवार की भावी पीढ़ी को भी दान पुण्य के संस्कार मिलते हैं। ❐

280 बच्चों को लगाया गया खसरे का टीका

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में दिनांक 20 और 21 फरवरी 2023 को सेवा भारती तथा महिला एवं बाल कल्याण विकास विभाग, दिल्ली सरकार द्वारा 12 वर्ष तक की आयु सीमा के बच्चों के लिए खसरे के टीके लगाने का कैम्प आयोजित किया गया। कैम्प का समय प्रातः 9.00 बजे से दोपहर 3.00 बजे तक था, जिसमें पहले दिन बस्ती के लगभग 150 बच्चों का टीकाकरण किया गया तथा दूसरे दिन 130 बच्चों को खसरे का टीका लगाया गया।

शिक्षाप्रद कथा

जोग और भोग

■ हेमन्त शर्मा

एक बार एक राजा ने विद्वान ज्योतिषियों और ज्योतिष प्रेमियों की सभा बुलाकर प्रश्न किया कि मेरी जन्म पत्रिका के अनुसार मेरा राजा बनने का योग था मैं राजा बना, किन्तु उसी घड़ी मुहूर्त में अनेक जातकों ने जन्म लिया होगा जो राजा नहीं बन सके क्यों? इसका क्या कारण है? राजा के इस प्रश्न से सब निरुत्तर हो गये। क्या जवाब दें कि एक ही घड़ी मुहूर्त में जन्म लेने पर भी सबके भाग्य अलग-अलग क्यों हैं। सब सोच में पड़ गए। अचानक एक वृद्ध खड़े हुये और बोले महाराज की जय हो! आपके प्रश्न का उत्तर भला कौन दे सकता है, आप यहाँ से कुछ दूर घने जंगल में यदि जाएँ तो वहां पर आपको एक महात्मा मिलेंगे उनसे आपको उत्तर मिल सकता है।

ज्योतिष शास्त्र, कर्तव्य शास्त्र और व्यवहार शास्त्र है। एक ही मुहूर्त में अनेक जातक जन्मते हैं किन्तु सब अपना किया, दिया, लिया ही पाते हैं। जैसा भोग भोगना होगा वैसे ही योग बनेंगे। जैसा योग होगा वैसा ही भोग भोगना पड़ेगा यही जीवन चक्र ज्योतिष शास्त्र समझाता है।

राजा की जिज्ञासा बढ़ी और घोर जंगल में जाकर देखा कि एक महात्मा आग के ढेर के पास बैठ कर अंगार (गरमा गरम कोयला) खाने में व्यस्त हैं। सहमे हुए राजा ने महात्मा से जैसे ही प्रश्न पूछा महात्मा ने क्रोधित होकर कहा, 'तेरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए मेरे पास समय नहीं है। मैं भूख से पीड़ित हूँ। तेरे प्रश्न का उत्तर यहां से कुछ आगे पहाड़ियों के बीच एक और महात्मा हैं, वे दे सकते हैं।'

राजा की जिज्ञासा और बढ़ गयी, पुनः अंधकार और पहाड़ी मार्ग पार कर बड़ी कठिनाइयों से राजा दूसरे महात्मा के पास पहुंचा किन्तु यह क्या महात्मा को देखकर राजा हक्का-बक्का रह गया। दृश्य ही कुछ ऐसा था। वे महात्मा अपना ही माँस चिमटे से नोच-नोच कर खा रहे थे। राजा को देखते ही महात्मा ने भी डांटते हुए कहा, 'मैं भूख से बेचैन हूँ। मेरे पास इतना समय नहीं है। आगे जाओ पहाड़ियों के उस पार एक आदिवासी गाँव में एक बालक जन्म लेने वाला है, जो कुछ ही देर तक जिन्दा रहेगा। सूर्योदय से पूर्व वहाँ पहुँचो, वह बालक तेरे प्रश्न का उत्तर दे सकता है।'

सुन कर राजा बड़ा बेचैन हुआ। बड़ी अजब पहेली बन गया मेरा प्रश्न। उत्सुकता प्रबल थी। कुछ भी हो यहाँ तक पहुँच चुका हूँ, वहाँ भी जाकर देखता हूँ, क्या होता है। राजा पुनः कठिन मार्ग पार कर किसी तरह प्रातः होने तक उस गाँव में पहुंचा। गाँव में पता किया और उस दंपति के घर पहुंचकर सारी बात कही और शीघ्रता से बच्चा लाने को कहा। जैसे ही बच्चा हुआ दम्पति ने नाल सहित बालक राजा के सम्मुख उपस्थित किया।

राजा को देखते ही बालक ने हँसते हुए कहा, 'राजन्! मेरे पास भी समय नहीं है, किन्तु अपना उत्तर सुन लो। तुम, मैं और दोनों महात्मा सात जन्म पहले चारों भाई व राजकुमार थे। एक बार शिकार खेलते-खेलते हम जंगल में भटक गए। तीन दिन तक भूखे प्यासे भटकते रहे। अचानक हम चारों भाइयों को आटे की एक पोटली मिली। जैसे-तैसे हमने चार बाटी सेकीं और अपनी अपनी बाटी लेकर खाने बैठे ही थे कि भूख-प्यास से तड़पते हुए एक महात्मा आ गये।

अंगार खाने वाले भैया से उन्होंने कहा, 'बेटा मैं दस दिन से भूखा हूँ। अपनी बाटी में से मुझे भी कुछ दे दो, मुझ पर दया करो जिससे मेरा भी जीवन बच जाय। इस घोर जंगल से पार निकलने की मुझमें भी कुछ सामर्थ्य आ जायेगी। इतना सुनते ही भइया गुस्से से भड़क उठे और बोले, 'तुम्हें दे दूंगा तो मैं क्या आग खाऊंगा? चलो भागो यहां से ....।'

वे महात्मा जी फिर मांस खाने वाले भइया के निकट आये। उनसे भी अपनी बात कही किन्तु उन भइया ने भी महात्मा से गुस्से में आकर कहा कि बड़ी मुश्किल से प्राप्त ये बाटी तुम्हें दे दूंगा तो मैं क्या अपना मांस नोचकर खाऊंगा? भूख से लाचार वे महात्मा मेरे पास भी आये।

मुझसे भी बाटी मांगी... तथा दया करने को कहा किन्तु मैंने भी भूख में धैर्य खोकर कह दिया कि चलो आगे बढ़ो मैं क्या भूखा मरूं!'

बालक बोला, 'अंतिम आशा लिये वो महात्मा हे राजन !आपके पास आये, आपसे भी दया की याचना की, सुनते ही आपने उनकी दशा पर दया करते हुये खुशी से अपनी बाटी में से आधी बाटी आदर सहित उन महात्मा को दे दी।

बाटी पाकर महात्मा बड़े खुश हुए और जाते हुए बोले 'तुम्हारा भविष्य तुम्हारे कर्म और व्यवहार से फलेगा।' बालक ने कहा, 'इस प्रकार हे राजन! उस घटना के आधार पर हम अपना भोग, भोग रहे हैं। धरती पर एक समय में अनेक फूल खिलते हैं, किन्तु सबके फल रूप, गुण, आकार-प्रकार, स्वाद में भिन्न होते हैं।

इतना कहकर वह बालक मर गया। राजा अपने महल में पहुंचा और माना कि ज्योतिष शास्त्र, कर्तव्य शास्त्र और व्यवहार शास्त्र है। एक ही मुहूर्त में अनेक जातक जन्मते हैं किन्तु सब अपना किया, दिया, लिया ही पाते हैं। जैसा भोग भोगना होगा वैसे ही योग बनेंगे। जैसा योग होगा वैसा ही भोग भोगना पड़ेगा यही जीवन चक्र ज्योतिष शास्त्र समझाता है। ❐

धर्म और सम्प्रदाय में अंतर

■ आचार्य कृष्ण देव

शुद्ध आध्यात्मिक प्रशिक्षण से जब तक हम नहीं गुजरते धर्म को महज पूजा-पाठ पद्धति या अंध विश्वास समझ बैठते हैं। इसी गलत धारणा में कई लोग जीवनभर धर्म से घृणा करते या धर्म से दूर रह जाते हैं। इसी अज्ञानता में धर्म-अमृत के आस्वादन से वंचित रह जाते हैं! जैसे सूर्य का धर्म (प्रकृति) है प्रकाश और ऊष्मा, चन्द्र का धर्म है प्रकाश और शीतलता, जल का धर्म है शीतलता और तरलता। इसी तरह हम समझ सकते हैं कि धर्म का सम्बंध वास्तव में हमारे नित्य स्वभाव से है, हमारी असल प्रकृति से है!

पूजा, पाठ, प्रार्थना, और इसी सत्य(धर्म) को जानने और अपनाने की विधि सबकी अलग-अलग हो सकती है। यही बनाता है अलग-अलग सम्प्रदाय (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई इत्यादि)!

मानव का असली धर्म है, मन -वचन- कर्म से अपने स्वभाव में रहना, अपनी प्रकृति में रहना। हमारा असली धर्म है 'सच्चिदानंद', (अर्थात् अपने सत-चित्त-आनन्द को जानना और अपने स्वभाव में रहना)! जो भी अपने (इस) स्वधर्म में होगा, स्वाभाविक निर्भयता, सहजता और आनन्द में होगा! और आनन्दित व्यक्ति कभी किसी को दुख नहीं देगा, बल्कि सुख देगा, आनन्द देगा, क्योंकि यही है उसके पास। यही है हमारा असली धर्म, यही है हमारा असली स्वभाव। भीतर स्वाभाविक प्रेम और करुणा होगी। और जिसके भीतर दिव्य प्रेम और करुणा होगी, उसके भीतर सभी दैवीय गुण होंगे, सभी व्यावहारिक धर्म होंगे, जो उसके व्यक्तिगत हित में भी होगा और सम्पूर्ण मानवता के हित में भी होगा। इसके विपरीत कुछ दिखे, उसे धर्म समझने की भूल मत करना, वह धर्म है ही नहीं। और जहाँ धर्म नहीं होगा वहाँ नैतिक मूल्य नहीं होगा, स्वास्थ्य नहीं होगा, शांति नहीं होगी। जहाँ सच्चा धर्म नहीं होगा वहाँ न शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा, न मानसिक, न सामाजिक, न पारिवारिक स्वास्थ्य!

सभी सम्प्रदायों का उद्देश्य इसी मानव धर्म को पुनर्जागृत करना होना चाहिए, जो ईश्वरीय प्रेम सिखाता हो। सत्संग यही प्रशिक्षण देता है। अन्यथा हम केवल कर्मकांड करते रह जाते हैं, लेकिन हमारा मूल (ये क्यों करना चाहिए) स्पष्ट नहीं होता! बिना उचित मार्गदर्शन और धर्म प्रशिक्षण(सत्संग) के हम जीवनभर दुख और अज्ञानता में रह जाते, शुद्ध धर्म में जीना नहीं सिख पाते हैं।

हरेक प्रबुद्ध जन का नैतिक कर्तव्य है, कि वो शुद्ध धर्म का शोध कर पहले स्वयं आनन्द में जीना सिख लें, और अपनी स्वानुभूतियों से शुद्ध धर्म का जीवनभर प्रचार प्रसार करें। यही मानवता की सच्ची सेवा होगी, यही संसार की सच्ची सेवा होगी, यही सच्चा धर्म होगा! ❐

बुजर्गों का अनुभव

■ आचार्य राजन दीक्षित

घर के बड़े-बूढ़ों का अनुभव हमेशा हमारे काम आता है, इसीलिए वृद्ध लोगों का सम्मान करें।

एक प्रचलित लोक कथा के अनुसार किसी राज्य में एक जवान व्यक्ति राजा बना। उसने मंत्रियों को आदेश दे दिया कि बूढ़े लोग हमारे किसी काम के नहीं हैं। ये हमेशा बीमार रहते हैं, कोई काम नहीं करते, इनकी वजह से राज्य का पैसा बर्बाद होता है। सभी बूढ़ों को मृत्यु दंड दे दो। जैसे ही ये आदेश राज्य के बूढ़ों को मालूम हुआ तो वे रातों रात दूसरे राज्य में चले गए। एक गरीब लड़का अपने पिता से बहुत प्रेम करता था, उसके पास इतना धन भी नहीं था कि वह घर छोड़कर दूसरे राज्य में जा सके। इसीलिए उसने अपने पिता को घर में ही छिपा लिया।

कुछ ही दिनों के बाद उस राज्य में अकाल पड़ गया। राजा को समझ नहीं आ रहा था कि अब प्रजा के खाने की व्यवस्था कैसे की जाए, उन दिनों भीषण गर्मी भी पड़ रही थी। गरीब लड़के ने अपने बूढ़े पिता से अकाल से निपटने का उपाय पूछा। उसके पिता ने कहा कि राज्य से कुछ ही दूर ही हिमालय स्थित था। गर्मी से हिमालय की बर्फ पिघलने लगेगी और वह पानी उस राज्य की ओर बहता हुआ आएगा। वह पानी यहां आए इससे पहले तुम एक काम करो राज्य के मार्ग पर दोनों तरफ हल चला दो।

लड़के ने राज्य के लोगों को ये उपाय बताया, लेकिन किसी ने उसकी बात नहीं मानी। लड़के ने अकेले ही रास्ते पर दोनों तरफ हल चला दिया। जल्दी ही हिमालय का पानी राज्य के रास्ते पर आ गया। कुछ ही दिनों में राज्य की सड़कों पर अनाज के पौधे उग आए। जब ये बात राजा को मालूम हुई तो उस गरीब लड़के को दरबार में बुलवाया गया। राजा ने लड़के से पूछा कि ये अनाज उगाने का ये उपाय तुम्हें किसने बताया?

लड़के ने कहा कि महाराज ये उपाय मेरे पिता ने बताया था। आपने जब बूढ़ों को मारने का आदेश दिया था तो मैंने उन्हें अपने घर में छिपा लिया था। ये सुनकर राजा ने उस बूढ़े व्यक्ति को भी दरबार में बुलवाया। बूढ़े व्यक्ति ने राजा से कहा कि महाराज हमारे राज्य से लोग अपने खेतों से अनाज अपने घर ले जाते थे और कुछ लोग दूसरे राज्य अनाज बेचने जाते थे तो अनाज के कुछ दाने रास्ते के दोनों और गिर जाते थे। जब मेरे बेटे ने रास्ते की दोनों तरफ हल चलाया और हिमालय का पिघला हुआ पानी वहां पहुंचा तो वो दाने अंकुरित हो गए और अनाज उग गया। बूढ़े व्यक्ति की ये बात सुनकर राजा को अपने आदेश का बहुत पछतावा हुआ और राज्य से गए हुए सभी बूढ़े लोगों को वापस अपने राज्य में बुलवा लिया। कथा की सीख इस कथा की सीख यह है कि बड़े-बूढ़े लोग बेकार नहीं होते हैं। उनका अनुभव हमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयों से बचा सकता है। इसीलिए सभी वृद्ध का सम्मान करना चाहिए। ❐

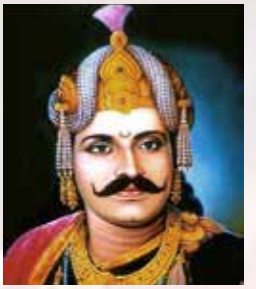

सेवा समर्पण के समस्त पाठकों को

होली, विक्रमी संवत् 2080

और श्री रामनवमी

की हार्दिक शुभमकामनाएँ

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

सेवाधाम के स्तम्भ

यह परिवार सेवा भारती से सेवाधाम के भूमिपूजन कार्यक्रम में जुड़ा। भूमिपूजन के समय दस लाख रुपए की राशि दान में देने की घोषणा की। इतना दान देने के बाद सेवाधाम के निर्माण में बिल्डिंग मटेरियल के लिए निरन्तर बार-बार श्री विष्णु कुमार जी को बड़ी राशि दान में देते रहे। इस तरह बहुत बड़ी राशि सेवाधाम के लिए दान देने वाले तीन बड़े दानदाताओं में से एक हैं -श्रीमती प्रोमिला एवं श्री सतीश मित्तल जी।

- नम्बर एक पर जमीनदाता - श्री जसवन्त जी
- दूसरे नम्बर पर श्री हरिकिशन राठी जी (मै. राठी स्टील वाले)
- और तीसरे हैं - श्रीमती प्रोमिला एवं श्री सतीश मित्तल जी
- सेवाधाम विद्यामन्दिर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर लगभग प्रति वर्ष 51000/- की राशि का दान।
- अशोक विहार, दिल्ली छात्रावास में अनेक वर्षों तक 10000/- की राशि प्रति मास देते रहे।
- श्रीमान विष्णु कुमार जी काफी समय तक अस्वस्थ रहे। जीवन के अन्तिम कई वर्षों तक बीमारी के समय इस परिवार ने उनके इलाज, दवाई और देखभाल करने में काफी मदद की।

- दक्षिणी विभाग और रामकृष्ण पुरम विभाग, दिल्ली को भी प्रतिवर्ष दान का सहयोग आपसे मिलता रहा है। वर्तमान में दक्षिणी विभाग के लिए दान देना और विशेषकर सामूहिक विवाह के अवसर पर प्रतिवर्ष दानदाताओं से दान लेने में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

इस परिवार के द्वारा दिए जाने वाले सहयोग के लिए अभिनन्दन है, आभार है, धन्यवाद है।

-खजान सिंह शर्मा

पूर्वी विभाग में सामूहिक विवाह

- **मयूर विहार जिला- 8-स्थान, काली बाड़ी मन्दिर प्रांगण, न्यू अशोक नगर**
- **इन्द्रप्रस्थ जिला- 11-स्थान, राधा कृष्ण मन्दिर, 5 ब्लॉक, खिचड़ी पुर**
- **गांधी नगर जिला - 7-स्थान, हरिओम मन्दिर, 11 ब्लॉक, गीता कालोनी**
- **शाहदरा जिला- 5-स्थान, हेडगेवार भवन, आर. ए. गीता बाल भारती**

सेवा भारती पूर्वी विभाग इन्द्रप्रस्थ जिला के तत्वावधान में 6 फरवरी को 7 जोड़ों के सामूहिक विवाह का आयोजन बड़े ही धूमधाम से राधाकृष्ण मन्दिर पाण्डव नगर में किया गया। बारातें गुरुद्वारे से चलकर मन्दिर पहुंचीं। मन्दिर समिति का भरपूर सहयोग रहा। 12 फरवरी को भी पूर्वी विभाग सेवा भारती द्वारा अलग-अलग स्थानों पर 31 जोड़ों का विवाह कराया गया।

इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध समाजसेवी राजीव गुप्ता जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पूर्वी विभाग के कार्यवाह श्री सतीश मित्तल जी, वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्वी विभाग सचिव श्री राजन कपूर जी, स्वामी आनन्दजी, आचार्य राम गोपाल दीक्षित जी आदि विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही। इन सभी आगन्तुकों ने सेवा भारती के अनथक प्रयासों को सराहा। सभी नव दम्पतियों को उज्ज्वल सफल वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद प्रदान किया। प्रान्त से श्री मिथलेश जी- गांधी नगर, डॉ. राम कुमार जी- शाहदरा, श्री सुशील गुप्ता जी - मयूर विहार, श्री दयानन्द जी - इन्द्रप्रस्थ, जिले में उपस्थित हुए। पूर्वी विभाग में 200 से अधिक कार्यकर्ताओं की सहभागिता रही। अत्यन्त सफल कार्यक्रम के लिए सभी को साधुवाद।

- भारती बंसल

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 6-7 मार्च, 2023, प्रकाशन तिथि-5 मार्च, 2023
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नं. U(C)-166/2022-24
DL(ND)-11/6188/2022-23-24
अग्रिम शुल्क के बिना प्रेषण

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रकल्प में ध्वजारोहण और सरस्वती पूजन

दिनांक 24 जनवरी 2023 को स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट, सेवा भारती, कलंदर कालोनी, दिलशाद गार्डन ने देश का 74वां गणतंत्र दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया। यह कार्यक्रम दिलशाद गार्डन स्थित गौरी शंकर मन्दिर के सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के उपरांत सरस्वती वंदना से हुआ। ध्वजारोहण का कार्यक्रम मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री जितेन्द्र सिंह शंटी जी द्वारा किया गया। ध्वजारोहरण के उपरांत उपस्थित अतिथियों का परिचय एवं स्वागत हुआ । बस्ती के गणमान्य लोगों का भी परिचय एवं स्वागत किया गया। तत्पश्चात केन्द्र के छात्र-छात्राओं द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का मंचन किया गया। कम्प्यूटर कक्षा के छात्रों के द्वारा योगासन एवं पिरामिड प्रदर्शन किया गया, जो कि बहुत ही आकर्षक एवं मनमोहक था। कार्यक्रम में बस्ती के लगभग 300 बंधु-भगिनियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान श्री शुकदेव जी, संगठन मंत्री, सेवा भारती-दिल्ली एवं श्री सुनील जी, सह-संगठन मंत्री का उद्‌बोधन हुआ। इन्होंने बच्चों का मनोबल बढ़ाया एवं उनका मार्गदर्शन किया ।

मुख्य अतिथि श्री जितेन्द्र सिंह जी ने भी बच्चों का मार्गदर्शन किया तथा केन्द्र के सेवा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम का समापन प्रकल्प प्रमुख जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन एवं ध्वजातरण के साथ हुआ। कार्यक्रम के उपरांत उपस्थित जनसमूह को प्रसाद आदि का वितरण किया गया। केन्द्र के बच्चों के लिए सामूहिक भोजन की भी व्यवस्था थी।

सरस्वती पूजन कार्यक्रम-2023

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी केन्द्र में अध्ययन कर चुके बच्चों (पुरातन छात्र परिषद, केशव सेवा केन्द्र) तथा वर्तमान में शिक्षा ग्रहण कर रहें बच्चों के द्वारा दिनांक 26 जनवरी 2023 को सरस्वती पूजन का कार्यक्रम विधिवत पूजन के साथ आरम्भ हुआ। दिनांक 26 जनवरी को प्रात: 9.00 बजे से 12.00 बजे तक विधि-विधान से पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात सभी लोगों को प्रसाद आदि का वितरण किया गया। 27 जनवरी को बस्ती की दो भजन मंडलियों के द्वारा पूरे दिन भजन कीर्तन का कार्यक्रम किया गया। इसमें बस्ती की लगभग 100 बहनों ने भाग लिया। कीर्तन के उपरांत प्रसाद आदि का वितरण सभी लोगों में किया गया। 28 जनवरी को सामूहिक भोजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें केन्द्र में पढ़ रहे बच्चों एवं कुछ महिलाओं के द्वारा भोजन प्रसाद बनया गया तथा उसके बाद सभी उपस्थित लोगों ने भोजन ग्रहण किया। सहभोज के कार्यक्रम में सेवा भारती, दिल्ली प्रदेश के कुछ गणमान्य लोगों का भी आगमन हुआ। 30 जनवरी, सोमवार को भव्य एवं मनोहर श्री सुन्दर काण्ड के पाठ का आयोजन हुआ। सुन्दर काण्ड पाठ के लिये प्रसिद्ध भजन गायक पण्डित श्री देवेन्द्र शास्त्री एवं उनकी मंडली का आगमन हुआ। बस्ती के लोगों ने एवं केन्द्र के बच्चों ने सस्वर सुन्दर काण्ड का पाठ किया। सुन्दर काण्ड एवं हनुमान चालीसा पाठ के उपरांत प्रसाद आदि का वितरण उपस्थित लोगों में किया गया। 01 फरवरी को प्रात: पूजन एवं आरती के उपरांत हवन का आयोजन हुआ तथा दोपहर 12 बजे के बाद से माँ की प्रतिमा का नगर भ्रमण आरम्भ हुआ तथा संध्या काल में 4 बजे विधिवत पूजन के साथ माता सरस्वती की मूर्ति का विसर्जन मुराद नगर स्थित गंगनहर में किया गया।

मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।